AGRADIANCE

"To Bring Together People of God"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER

APRIL 2022

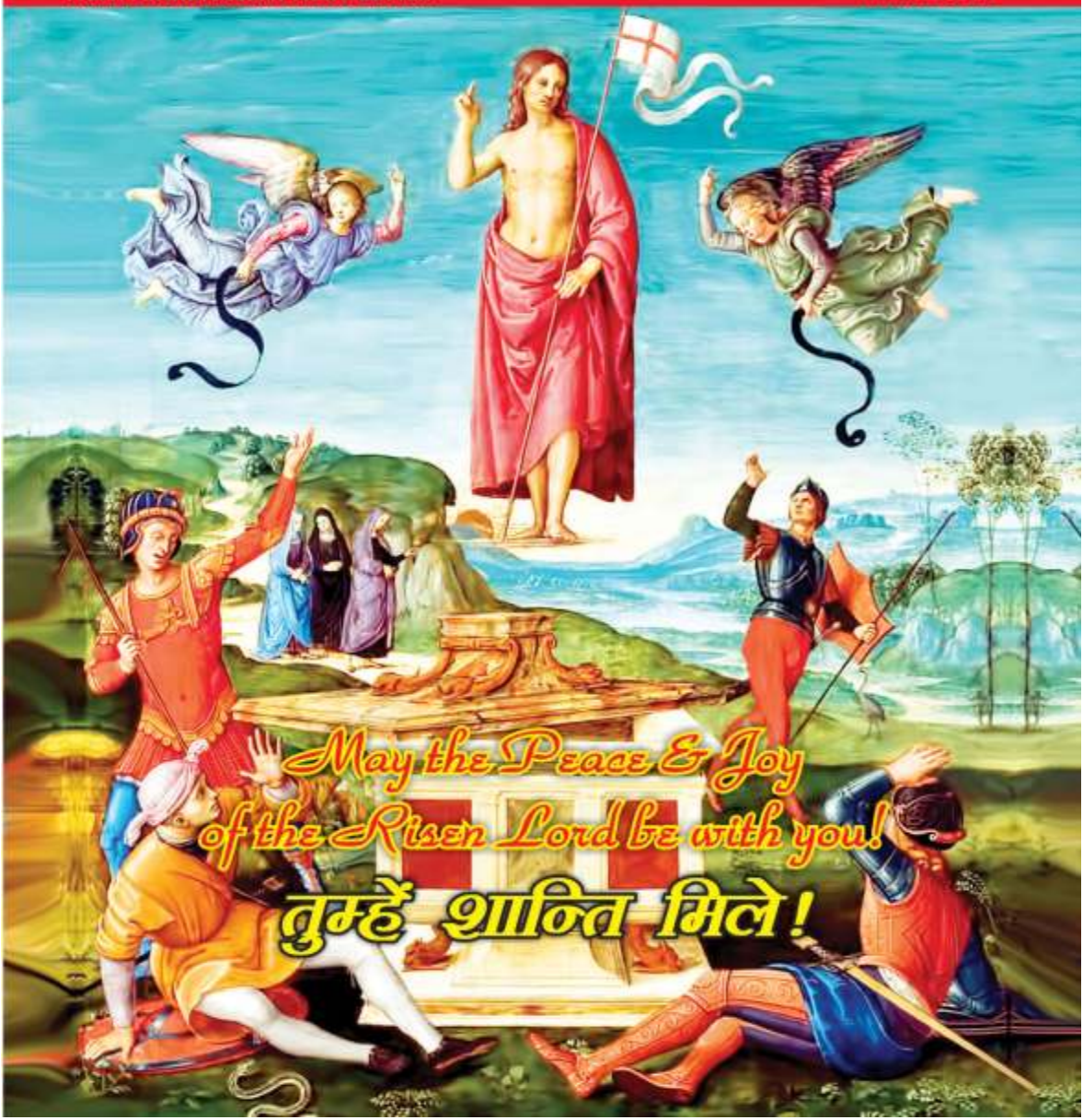

Archdiocese at a Glance

Rev. Sr. Joseph Michael
(New Superior General, MC)

Congratulations Fr. Raju Koipally
(for 29 years in Etawah Mission)

H.E. Francis Kalist
(New Abp. of Pondicherry)

Swami Anil Dev IMS – All is well!

St. Alphonsa's School – Sports Day

Alphonsians at Taj Mahotsav

Certificate Ceremony, St. Patrick's, Agra

Confirmation & Holy Comm. in SMC Agra

Charismatic Renewal, Cathedral, Agra

Editorial

प्रिय मित्रों, अप्रैल अंक (ईस्टर विशेषांक) आपके हाथों में है। **अग्रेडियन्स टीम** आप सबको हैप्पी ईस्टर या पास्का मुबारक कहती है। प्रभु येसु मसीह सचमुच जी उठे हैं। आल्लेलूया! पुनर्जीवित प्रभु येसु की शांति और बरकत आप सभी लेखकों और पाठकों के हृदयों में छा जाए। जो लोग अभी भी कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के दण्ड से जूझ रहे हैं, पुनर्जीवित प्रभु उन्हें शारीरिक चंगाई प्रदान करे। ऐसी हमारी दुआ और कामना है, आपके लिए।

अग्रेडियन्स के माध्यम से ही हम अपने माननीय मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी जी को दूसरी बार मुख्यमंत्री बनने पर हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं। आशा है, कि अपने दूसरे कार्यकाल में सबको साथ लेकर सबके विकास की बात करेंगे।

विश्व में और विशेषकर हमारे अपने ही देश में कोरोना दम तोड़ता नजर आ रहा है, यह एक सुखद संदेश है। जीवन पुन: अपने ढर्रे पर निर्बाधित गति से चल निकला है। इससे शिक्षा, मेडिकल, टूरिज़्म, होटल आदि क्षेत्रों में हमारे युवाओं को रोज़गार के सुनहरे अवसर मिलेंगे... ऐसी हमारी आशा है। बेशक कई राज्यों में कोरोना सम्बन्धी पाबन्दियां हटा दी गई हैं, लेकिन फिर भी हमें एहतियातन तौर पर अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य की चिन्ता करते हुए फेस मास्क फिलहाल लगाए रखने की जरूरत है, 'अन्यथा न जाने वह दिन कब फंदे की तरह अचानक तुम पर आ गिरे।' चीन देश में वर्तमान समय में क्या हो रहा है? सब भलीभांति जानते हैं। वहाँ की सरकार नहीं चाहती कि कोई फिर से उन्हें दोष दे और हमने तो बढ़चढ़कर शादी-ब्याह, ताज महोत्सव जैसे आयोजनों में भाग लेना शुरु कर दिया है। शादी होती रहेंगी, ताज महोत्सव अगले साल भी लगेगा, अगर जीवन ही नहीं रहा तो यह सब किस काम का?

हमारे अपने मेरठ धर्मप्रांत के अति श्रद्धेय बिशप फ्रांसिस कलिस्ट को संत पिता फ्रांसिस ने पुडुचेरी-काडालोर महाधर्मप्रांत का मेट्रोपोलिटन महाधर्माध्यक्ष नियुक्त है। यह सबके लिए बड़े हर्ष का विषय है। जैसे बापू के बारे में कहा जाता है, वही उनके बारे में भी सिद्ध है, ''इस व्यक्ति की महानता उसकी सज्जनता में है।''

संत पिता फ्रांसिस द्वारा प्रस्तावित धर्मसभा (सीनड) अबाध गति से चल रही है। सभी गिरजाघरों में प्रतिदिन विशेष प्रार्थनाएं की जा रही हैं। बड़ी-बड़ी मीटिंग हो रही हैं। साथ कुछ लोकधर्मी यह भी कह रहे हैं, कि धर्मसभा के सम्बन्ध में हमारी नहीं सुनी जा रही है। उन्हें उनका पक्ष नहीं रखने दिया जा रहा है। यह धर्मसभा भी सबका साथ, सबका विकास की बात करती है।

रूस ने यूक्रेन को पूरी तरह तबाह कर दिया है। अब कुछ खास नहीं बचा है। युद्ध से कभी शांति और विकास की अपेक्षा नहीं जा सकती। अंग्रेजी भाषा में एक उक्ति रूसी राष्ट्रपति पुतिन पर पूरी तरह चरितार्थ होती है, ''एब्सोल्यूट पावर करप्ट्स ए मैन एब्सोल्यूटली।'' (पूर्ण शक्ति किसी भी व्यक्ति को पूर्ण रूप से नष्ट-भ्रष्ट कर देती है।) खुदा खैर करे।

गत सप्ताह हमने बहुत प्यारे फादर मैथ्यु थुंडियिल को खो दिया। विगत डेढ़ साल से वे कैंसर रोग से जूझ रहे थे। अन्त में संत पौलुस की भांति उन्होंने स्वयं को प्रभु के हाथों में यह कहते हुए सौंप दिया, ''मैं अपनी दौड़ पूरी कर चुका हूँ और पूर्ण रूप से ईमानदार रहा हूँ।'' उनके इस प्रकार चले जाने से जो खालीपन उत्पन्न हो गया है, उसे भरने में युग लग जाएंगे।

इसी प्रकार हमारी सिस्टर लूसी डिसूज़ा (आर जे एम) ने अपनी भाभी, फादर जोसफ पसाला ने अपने अंकल और फादर जॉन फरेरा ने अपने बड़े भाई खो दिए।

संपादकीय लिखते-लिखते हमें यह दु:खद संदेश मिला है, कि हमारी प्यारी और वात्सल्य की मूर्ति मदर फलाविया एफ.सी.सी. 4 अप्रैल की भोर में साढ़े तीन बजे 88 वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधार गई हैं।

इस समय उत्तर प्रदेश बोर्ड के बच्चों की परीक्षाएं चल रही हैं। जल्दी ही अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय के बच्चों की ओर विश्व विद्यालय की परीक्षाएं भी शुरु होने वाली हैं। सभी छात्र-छात्राओं को हमारी शुभकामनाएं।

आपको पत्रों, सुझावों और आलोचनाओं का भी सदा स्वागत है।

ख्रीस्त में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस
(कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

Shepherd's Voice

Faith in the resurrection of the Lord Jesus Christ is one of the central doctrines of Christianity. The life, liturgy, creeds, and day-to-day faith of Christians prove this point.

To believe in the resurrection is more than simply accepting that God will raise the dead. It means believing in Jesus' Resurrection. And that means believing that Jesus is now Lord, and now offers us to share of risen life. To truly believe in Jesus' resurrection is to perceive it as the central reality on which we build our lives. And to do that make us Christians.

Fr. Ignatius Puthiyadam says: "In order to be convinced of the resurrection of Jesus Christ, the same Holy Spirit has to instil into us a spark of faith and a share in the new life. What is important is to be inserted into the risen life of Jesus and to be transformed by its power.

What do we mean when we say that Jesus is raised from the dead? It means that the death of Jesus was not the end of his story. He continues to live with us and for us. The resurrection of Jesus has great significance for our lives. The risen Jesus is the source of our life. To borrow St. Paul's expression, Jesus who suffered, died and rose from the dead, has become "a life-giving Spirit" (cf. I Cor 15:45). Through baptism we are united to Christ as branches to the vine. It is the link with the vine that guarantees the branches life, growth and development. Even so it is the vital communion with the risen Jesus that gives us the guarantee of our own resurrection and life.

Even though it is baptism that establishes the vital link between the Christian and the risen Lord, it is Eucharist that makes the baptismal life grow and fructify. Every worthy reception of the Eucharistic Lord gives us a greater share in his Easter life.

The risen Lord is also our source of joy. A number of things can destroy our joy: meaninglessness, suffering, pain and fear of death. The risen Jesus teaches us how to live and how to die. For life and death and life beyond death, the model for the Christian is Jesus. By his death and resurrection, Jesus has destroyed the sting and power of death (cf. I Cor 15:55-56)and given us meaning and hope. He tells us: "Do not be afraid, I am the first and the last, the one who lives. Once I was dead, but not I am alive forever and ever. I hold the keys to death and the netherworld" (Rev 1:17-18).

When we abandon sin and selfishness and live and die for others, we participate in the mystery of Christ's resurrection and fulfill its purpose: "He indeed died for all, so that those who live might no longer live for themselves but for him who for their sake died and was raised" (2 Cor 5:15).

I would like to conclude this meditation with the words of Fr. George Maloney: "The miracle of the resurrection is happening at every moment of our lives, as we are open to God's Word speaking in his creative act of raising us up to new levels of sharing in his resurrectional, transforming love…As long as we love another, Christ is more completely being risen and manifested in power and glory on this earth"

I wish you a glorious Easter and new life in abundance!

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (संक्षिप्त रूप)

प्रभु येसु ख्रीस्त के पुनरुत्थान में विश्वास करना ख्रीस्तीय धर्म की एक प्रमुख शिक्षा है। हमारा जीवन, पूजन पद्धति, धर्मसार और प्रतिदिन का विश्वास इस बात की घोषणा करते हैं।

पुनरुत्थान में विश्वास करना; इससे कहीं अधिक सहज है यह स्वीकार करना कि ईश्वर मृतकों को पुनर्जीवित कर देगा। इसका मतलब है, प्रभु येसु के पुनरुत्थान में विश्वास करना। वास्तव में प्रभु येसु के पुनरुत्थान में विश्वास करने का अर्थ है, यह हमारे जीवन की केन्द्रीय वास्तविकता है, जिस पर हमारा जीवन आधारित है। वही बात हमें मसीही बनाती है।

फादर इग्नेशियुस पुदियादम कहते हैं, कि ''प्रभु ख्रीस्त के पुनरुत्थान में विश्वास करने का अभिप्राय है, उसी पवित्र आत्मा को हममें विश्वास की चिंगारी को जगाना है और एक नवजीवन में भागीदारी करनी है। यहाँ जरूरी बात है कि येसु के पुनर्जीवित जीवन में शामिल होना और उसकी शक्ति द्वारा परिवर्तित होना। इस बात का क्या मतलब है, येसु मृतकों में से जी उठे हैं। इसका मतलब है, कि येसु की मृत्यु उसकी कहानी का अन्त नहीं है। वह आज भी हमारे साथ और हमारे लिए जीवित है।''

प्रभु येसु के पुनरुत्थान का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। अपने इस मनन-चिन्तन के अंत में फादर जॉर्ज मलोनी को उद्धत करना चाहता हूँ, ''पुनरुत्थान का चमत्कार हमारे जीवन के हर क्षण में हो रहा है। जितना अधिक हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, प्रभु ख्रीस्त अपनी महिमा और सामर्थ्य के साथ पूर्ण रूप से पुनर्जीवित और प्रकट होते जाते हैं।

मैं आप सभी को पास्का पर्व की शुभकामनाएं देता हूँ और आपके लिए बहुतायत में नवजीवन की कामना करता हूँ।

प्रभु में आपका,

✠ **राफी मंजलि**

(महाधर्माध्यक्ष, आगरा महाधर्मप्रांत)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (APRIL, 2022)

1	Traveling to Kerala
2	Funeral of Fr. Mathew Thundiyil
4	Return to Agra
7	Recollection & Chrism Mass
23	Holy Mass: UMI, Greater Noida
	Holy Mass: St. Fidelis Church, Aligarh
24	Ordination of Dn. Kulkant & Dn. Sachit
28	Traveling to Pondicherry
29	Installation Ceremony of the New Archbishop Most Rev. Dr. Francis Kalist
30	Return to Agra

'I love you and will pray for you from Heaven'

The phone rang repeatedly. Taking it to be an emergency, I answered and the voice at the other end said, *"Rekha, Sr. Lilly is very serious. She can die any moment. Before that she wants to talk to you."*

Sr. Lilly was my Superior in one of the Communities years back while I was a junior Sister and she was one of those persons who simply loved me, selflessly, unconditionally and very fondly.

Immediately I turned on the video call and saw beloved Sr. Lilly on the hospital bed, with nasal cannula, breathing with great un-ease. She looked at me and mumbled a wonderful promise, ***"Rekha, I love you, and I will pray for you from heaven"!***

I was totally stunned and speechless! I have heard that as the body shuts down, most of the dying persons lose interest in people around them and just withdraw. How could this lady lying in deep pain and agony, almost at the verge of death, be so thoughtful and altruistic… **unless it was the power of His Resurrection!** She didn't ask for prayers, rather she promised her prayerful support from heaven! She reminded me of Jesus, who, before His death on the Cross, out of His great love, prayed for His disciples in John 17. **'The height of Love'…that promises support and accompaniment, not only on earth, but beyond it!**

That same evening, Sr. Lilly breathed her last and for sure, was with Her Risen Lord in Heaven, showering blessings upon us, her loved ones, from above!

Friends, **when we know who we are and whom we belong to,** when we realize we're full of Resurrection Power, we won't live intimidated, thinking, "Oh, this problem is too big". No, we'll put our shoulders back knowing that the same power that raised Christ from the dead lives on the inside of us.

A missionary shared about a dream that he had. In this dream he saw himself standing in a large room. At the other end of the room, Satan himself was standing there staring at him very evilly. This terrible gaze was holding him captive. He tried again and again to break free and get out of the room but he couldn't move. He was totally paralyzed. The more he tried, the more he struggled, the more Satan would sarcastically laugh. In the dream, he was so afraid that he couldn't pray, he couldn't quote a scripture, couldn't remember anything. He was frozen stiff, held hostage by these evil glaring eyes.

Then all of a sudden, Jesus stepped into the room and walked right between the two men. Jesus was facing Satan with his back to this man. Jesus started backing up. The man said, *"No, Jesus. Don't back up. You're not afraid of Satan"*. But Jesus kept backing up and backing up until he got right in front of this man. There was nowhere else to go. But in his dream, Jesus took another step backwards and he stepped into the man. *Jesus' arms went into his arms. Jesus' legs into his legs. Jesus' torso into his torso*.When Jesus completely disappeared into him, the missionary saw himself lift his hand and point at Satan and Satan immediately fell to the ground and he gloriously

walked out of that room.

Now we may not feel powerful but we've got to know that **the most powerful force in the universe is on the inside of us.** At the name of Jesus, the Scripture says, everything has to bow. We don't have anything to be afraid of.

The Scripture says, "*To be absent from the body is to be present with the Lord*". When there comes our time to go, we'll breathe one final breath but **that's not the end**. Our next breath, we'll be more alive than ever, breathing heavenly air, at a place where there is no pain, no sickness and no sorrow. We can say with the apostle Paul, ***"Oh death, where is your victory? Oh grave, where is your sting"?*** We know we have resurrection power. We know those that are for us are greater than those that are against us. We know our enemy has been eternally defeated.

EASTER challenges us;*"Put your shoulders back. Hold your head up high. You are not weak, intimidated or helpless. The same power that raised Christ from the dead lives on the inside of you. If you'll rise up and tap into this power;because He lives, you too will live an abundant, overcoming, faith-filled, victorious life. In Jesus' name." Amen!*

HE IS ALIVE and we are full of 'RESURRECTION POWER'!BLESSED EASTER!

Sr. Rekha Punia, UMI
Nirmala Provincialate, G. Noida

Team Agradiance wishes its writers and readers a very Happy Easter. May the Risen Lord Bless you with His Peace, Love & Joy. – Editor

DATES TO REMEMBER (APRIL)

01 O.D. Fr. Joseph Dabre
02 O.D. Fr. Shaji Joseph
02 O.D. Fr. Mathew Kanjirathinkal
02 B.D. Fr. Lawrence V. Raja
04 O.D. Fr. Gregory Tharayil
07 B.D. Fr. Shibu Kuriakose
08 O.D. Fr. George Paul
10 O.D. Fr. Anthony C.J.
11 B.D. Fr. Bhaskar Jesuraj
11 B.D. Fr. Stany Rodrigues
11 O.D. Fr. John Ferreira
11 O.D. Fr. Robert Varghese
12 B.D. Fr. Paul Thannickal
14 B.D. Fr. Jose Akkara
14 O.D. Fr. Dennis D'Souza
14 O.D. Fr. Mathew Kumblumoottil
15 O.D. Fr. Santosh D'Sa
15 O.D. Fr. Prakash D'Souza
19 O.D. Fr. Raphy Vallachira
20 O.D. Fr. Vinoy P.M.
20 O.D. Fr. Rogimon Thomas
21 O.D. Fr. Bhaskar Jesuraj
24 B.D. Fr. Jose Maliekal
25 B.D. Fr. M.A. Jude
26 O.D. Fr. Paul Thannickal
26 O.D. Fr. Arun Lasrado
26 O.D. Fr. Johnson M.A.
26 O.D. Fr. Shiju Palippadan
26 O.D. Fr. Varghese Kunnath
26 O.D. Fr. Charles Toppo
27 O.D. Fr. Sebastian Kollithanam
28 O.D. Fr. Jipson Palatty

भारी पत्थर हटा दो

—निशी अगस्टीन

विज्ञान के इस युग में जबकि मानव असम्भव को सम्भव बनाने में जुटा हुआ है, वह अप्रत्याशित कार्य करने में सक्षम हो चुका है। वह जीवन बनाने, बचाने और यहाँ तक कि छोटी सी कोशिका से नया प्राणी व इन्सान बना सकता है। वह मशीनी मानव रोबोट को भी बनाने में समर्थ है। मानव चन्द्रमा के साथ-साथ अन्य ग्रहों में बसने का इरादा कर चुका है। वह सागर की गहराई और अंतरिक्ष की ऊँचाईयाँ भी नाप चुका है; यहाँ तक कि सूर्य तक पहुँचना ही नहीं बल्कि दूसरा सूर्य बनाने का दु:साहस भी कर रहा है। लेकिन मानव किसी को जीवन दान देने में अब भी असमर्थ है। बुद्धि-विवेक से श्रेष्ठ मानव के लिए जो कुछ असम्भव है वह परमेश्वर के लिए संभव है। पुनर्जीवित होना भी इसी के संदर्भ में आता है। इसके अन्तर्गत पुनरुत्थान मानव शरीर में रहते असम्भव है। परन्तु प्रभु के सानिध्य से आत्मा का पुनरुत्थान होना सम्भव है।

एज़ेकिएल 37 में परमेश्वर ने सूखी हड्डियों को पुनर्जीवित करने का अद्‌भुत कार्य किया। एज़ेकिएल 37 की ही 10वीं पंक्ति में स्पष्ट लिखा है- ''और वे जीवित होकर अपने पैरों पर खड़े हो गए, वे संख्या में इतने अधिक थे मानो विशाल सेना हो।''

मित्रों! तो देखा अपने परमेश्वर को, उसने असम्भव कार्य को सम्भव कर दिखाया। यहाँ विश्वास ही पुनरुत्थान की नींव है क्योंकि यहेजकेल नबी ने परमेश्वर की आवाज पर विश्वास किया था। हमारा भी पुनरुत्थान होगा, अवश्य होगा।

कोरोना काल के बाद की चुनौतियों ने हमें कुंठित कर दिया है। आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और आज कल के माहौल की धार्मिक समस्याओं ने तो जैसे मुस्कराहट ही छीन ली है। लेकिन प्रभु कहता है- ''परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी निराशावादी क्यों न हों यहेजकेल की भाँति आप भी इन सूखी हड्डियों की घाटी (तत्कालीन समाज) में संदेश दो कि, ''हे हड्डियों! तुम जी उठोगी।''

मित्रों! हमारे इस प्रयास से निराशावादी, हताश लोगों में जीवन का संचार अवश्य होगा। हो सकता है हम किसी का जीवना बचा लें। हम संत थॉमस की भाँति पुनरुत्थान पर संदेह न करें- ''कि जब तक मैं उसके घावों के छेद में हाथ और उँगली न डाल लूँ, विश्वास नहीं करूँगा।'' और प्रभु को अपने छिदे हाथ उसे दिखाने पड़े थे; न ही हम शिष्यों की भाँति डरपोक और अविश्वासी भी बनें, जो उसके पुनरुत्थान के बाद भी भयभीत होकर द्वार बंद किए रहते थे, जबकि प्रभु येसु ने उनसे बार-बार कहते थे कि ''मैं तीसरे दिन जी उठूँगा।''

इसी प्रकार संत योहन अध्याय 11:25, मारकुस 8:31, लूकस अध्याय 9:22 व 18:33 पदों में प्रभु येसु के पुनरुत्थान के विषय में बार-बार लिखा है। प्रभु येसु कहते हैं- ''जीवन और पुनरुत्थान मैं हूँ, जो मुझमें विश्वास करेगा वह उद्धार को देखेगा।''

और हम जानते हैं बाइबिल अक्ष:रश सत्य है, तो हमें भी चाहिए हम भी अपनी आत्मा रूपी कब्र पर पड़े पाप और अविश्वास के भारी पत्थर को हटाएं और पुनरुत्थान पर विश्वास करें। जिस प्रकार प्रभु येसु ने विजय पाई, हमें हमारा पवित्र जीवन और प्रभु पर विश्वास, प्रार्थनामय दिनचर्या और प्रभु येसु के आदेशों का पालन ही पाप रूपी मृत्यु से बचाएगा। हम भी संत पौलुस की भाँति कह सकेंगे- **''हे मृत्यु कहाँ है तेरा डंक? कहाँ है तेरी विजय?''** क्योंकि, पुनरुत्थान का अर्थ मृत्यु पर प्रभु येसु की विजय थी जो न केवल उसकी ही बल्कि हम सभी विश्वासीजनों के लिए भी है। दूसरे शब्दों में- पाप के लिए हम मर-मर कर न जिएँ वरन अपने कार्यों, व्यवहार और पवित्रता से अमरता को प्राप्त करें। ***शेषांश पृष्ठ 19 पर***

Eastern Perspective on Synodality

Introduction - The Catholic Church is the communion of 24 Individual Churches. Synodality is based on processes of listening, dialogue and community discernment in which every person can participates and contribute. Ecumenical councils, regional or provincial synods, eparchial assemblies were held throughout the centuries. According to Robert Barren, "There is a distinction to be made between synodality, which is concept, meaning the synergy between the authority of Bishops and the Holy Spirit poured out on the whole Church and the synodal structure, which is institution formed give concrete articulation and workability to the concept."

1. Synod of Bishops - Inspired by the apostolic council of Jerusalem, synods and assemblies developed in the early Church, especially when the Church was confronted with serious problems that could not be resolved by "a single bishop. Synod of Bishops who have been chosen from different regions and meet together at fixed times to foster closer unity between the Roman Pontiff and Bishops, to assist the Roman Pontiff with their counsel in preservation and growth of faith and morals" (CIC 1983, Canon 342).

2. Eparchial Assembly - Eparchial Assembly is viewed as an effective and excellent means of participation of all the Christian faithful in the governance of the local Church particularly in evolving pastoral policies and programmes with the binding force of law. "In the eastern Churches, a parallel institute to the Diocesan Synod is the Eparchial Assembly which is periodically convened at the discretion of the eparch to advise him on matters of importance for the eparchy (CCEO, CC 235-242)."

3. Local Assembly - The Carmelite missionary Paulino, affirms: "Because there were not enough Bishops in the early Indian context, a provincial synod was not practicable. As a result, the Indian Eastern Church of St. Thomas evolved its own quasi-synodal structure known as palliyogam or church-assembly, which had most of the powers of the previous provincial synods except for the election of bishops."

However, synodality was practiced in the Church. As Vatican II puts it, the Church is the People of God (*LG* ch.2). It highlights the equality of the members of the Church. Every baptized person participates in the royal priesthood and has a prophetic mission to listen to the prompting of the Holy Spirit and act accordingly. This was practiced by the Indian Eastern Church in its real spirit.

In the eastern Churches in India, there were three kinds of church assemblies that put into practice the synodality of the Church: the *pallyogam*, the *desiya yogam and the maha yogam.*

Pallyogam - The *palliyogam* was made up of clergy and the lay people who had equal rights and responsibilities. It was a meeting of the heads of Christian families and parish priest, usually presided over by the senior priest. Within the parish, this assembly had legislative, administrative, and judicial rights. Each parish autonomous and self-sufficient in the sense that its assembly had complete control over the acquisition and disposition of property, the selection and training of candidates for the priesthood, the maintenance of priests, deacons and seminarians, the administration of temporal goods and the vigilance

over the parish's entire ecclesial and spiritual life. Priests were ordained for the parish, not for the diocese. Public delinquents and sinners could be excommunicated by the assembly. Yogam's approach did not allow for either clericalism or lay monopoly. Cooperation between the clergy and the lay was the practical formula.

Desiya yogam- It was a conference of priests and representatives of the Christian faithful from at least four parishes in a region. A *yogam* like this was frequently convened for the administration of justice. The general church assembly put forward a condition at Angamaly in 1778 for resolving problems between the Church and foreign missionaries was: "No punishment would be meted out for any grave crime committed by the priests or laymen before the matter was judged by the representatives of four churches." As a result, according to Malabar custom, only the regional yogam was competent to judge serious cases.

Maha yogam-Matters about the whole community were decided by general *yogam*. The top Indian Church of St. Thomas Christians' top authority was the general assembly, which had legislative, judicial and administrative rights over the entire Church. According to the definition given by Paul Pallath, "General yogam was the assembly of the priests and representatives of the Christians convoked and presided over by the Archdeacon of all India." Fr. P. J. Podipara wrote in the introduction for the re-print of the *Varthamanppusthakam*, "The general Church assemblies were supreme, and *de facto* no higher ecclesiastical authority questioned their decisions. The Thomas Christians, therefore, formed as it were a Christian Republic with a head from among themselves."

Present Condition of Synodality - During the period of Latin governance (1599-1896) of the Church of the St. Thomas Christians, the regional and general *yogams became* extinct, because they were incompatible with the medieval concept of monarchic episcopal power prevalent in the West, which did not permit any participation of the Christian faithful in the administrative and decision making of the Church. The former *Mahayogam* was renovated in 1998 and given the name Major Archiepiscopal Assembly (MAA). In the metropolitan *sui iuris* Churches, the core ideals of Vatican II, namely autonomy and self-government, are not fully realized.

At present, the spirit of *pallyogam* is not evidently seen in all the parishes. We can enliven the present forms of synodality by increasing the participation of the laity. The synodality of the local churches can be made evidently to the civic bodies of the state through the compassionate face of the poor, refugees, minorities and the illiterate.

Conclusion - Eastern Churches emphasized the practical side rather than the legal and structural aspects of synodality. The circular model of the Church envisioned by the Second Vatican council instead of the pyramidal model can be seen in the Eastern Churches from the early centuries. A clear manifestation of the synodality of the Eastern Church is the *palliyogam* in which both the clergy and laity had their voice and synergy in the decision making. But gradually a decline in the early spirit of the *palliyogam* got diminished and a centralized administrative system for the whole emerged. As a result of the promulgation of the CCEO and fruitful synods, eastern *sui iuris* Churches can grow again organically by their liturgical, theological, spiritual, disciplinary patrimony in the socio-cultural milieu of each place where they are situated under the guidance of the Roman Pontiff.

–Fr. Alok Toppo, DVK, Bengaluru

यीशु मरे नहीं, आज भी ज़िन्दा हैं !

यह बात आने वाली पीढ़ी के लिए लिखी जाएगी और एक जाति जो सिरजी जाएगी, वही यहोवा की स्तुति करेगी। (भजन संहिता 102:18)

प्राचीन समय में लिखा पवित्र शास्त्र का यह कलाम हमें अवगत कराता है कि एक जाति ही ऐसी होगी जो यहोवा की स्तुति करेगी। उसमें परमेश्वर के चुने लोग ही होंगे जो आज तक हैं और जो चुने हुए नहीं थे, उन्होंने ही तो निर्दोष को दोष लगाकर मृत्यु के पथ पर ला दिया।

''तब पिलातुस किले से फिर बाहर निकला और वह लोगों से बोला, देखो मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम्हें मालूम हो कि मैं उसमें कुछ भी दोष नहीं पाता, तब यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहने हुए बाहर निकले और पिलातुस ने उनसे कहा, देखो, इस पुरुष को।'' (यूहन्ना 19:4-5)

उसके साथ एक जुल्म करने वाले व्यक्ति की तरह बरताव किया गया, उसे असहनीय पीड़ा दी गई। आवाम में से इस निर्दोष के पक्ष में किसी की आवाज नहीं निकली, जब कि सल्तनत के बादशाह ने भी यह कहकर अपना दामन झाड़ लिया कि मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता। बादशाह ने भी ऐसा कोई सख्त आदेश नहीं दिया कि हमारे प्रभु को बचाया जा सके। उसने उन अत्याचारियों को ही हमारे प्रभु को सौंप दिया। अवगुणी व्यक्ति हमेशा क्रोध में डूबे रहते हैं और ज्ञानवान हमेशा शान्त व सहज भाव से जीते हैं। परमेश्वर सबसे बड़ा और ऊँचा है, ऊँचे से मिलकर ही ऊँचाइयों को छुआ जा सकता है।

निर्मल से मिलकर निर्मलता आती है। सहज के साथ सहजता आती है, लेकिन वहाँ कोई निर्मल और सहज नहीं था, हमारे प्रभु ने तो हमें यह ही सिखलाया कि विश्व का प्रत्येक प्राणी आदर का पात्र है। सबमें एक परमेश्वर का रूप है, परमेश्वर की सुन्दर रचना इंसान है,यदि उसका सम्मान हमने किया तो यह वास्तव में उसके रचनाकार परमेश्वर का सम्मान है, यदि इसे हम अपना कर्त्तव्य बना लें तो वास्तव में शान्ति स्थापित हो सकती है।

प्रभु यीशु ने अपने समय में अनजाने में भी किसी को दु:ख नहीं पहुँचाया। सूर्य की किरणें जब बिखरी रहती हैं, तो उसमें सामान्य ताप ही उत्पन्न होता है, परन्तु यदि उन्हें किसी उत्तल लैंस द्वारा केन्द्रीयभूत कर लिया जाए तो आग उत्पन्न हो सकती है। यही बात हमारे विचारों के सम्बन्ध में भी सही है। हमारी अधिकांश क्षमता अस्त-व्यस्त विचारों से नष्ट होती रहती है। यदि बिखराव को रोका जाए तो अनेक चमत्कार देखे जा सकते हैं, और हम उनके गुनाहों से बच सकते हैं। हाय! उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते हैं, क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? क्या तुमको आरम्भ से ही नहीं बताया गया। जो आकाश को मलमल की भांति फैलाता और ऐसा तान देता है जैसे रहने के लिए तम्बू ताना जाता है। वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ्य देता है। यहोवा तो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सृष्टिकर्ता है। वह न थकता, न आश्रित होता है उसकी बुद्धि अगम है, हम किसको मारने का षडयन्त्र बुन रहे हैं, जो कभी मरा नहीं और न मरेगा। यीशु यह सब जानते थे, कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है। इसके बाद इसलिए कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो, उन्होंने कहा ''मैं प्यासा हूँ,'' वहाँ सिरके से भरा एक बर्तन रखा था। उन्होंने सिरके में भिगोए हुए स्पंज को जूफे पर रखकर यीशु के मुँह से लगाया। यीशु ने वह सिरका लिया और कहा? ''पूरा हुआ'' और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिये। (यूहन्ना 19: 28, 29, 30)

तो क्या उन्होंने हमारे प्रभु को मार दिया। ऐसा कभी नहीं! वह तो तीसरे दिन फिर जी उठा। हमारे प्रभु यीशु मरे नहीं, वह तो आज भी जीवित हैं, इसलिए पवित्र शास्त्र के कलाम में लिखा है कि ''तू जिन्दों को मुर्दों में क्यों ढूँढ रही है?'' वह आज भी जीवित है और हमारे आपके साथ रहते हैं। ये विश्वास करें हम उसे छोड़ सकते हैं लेकिन वह हमें कभी नहीं छोड़ता। हे सृष्टि के निमार्ता परमेश्वर, हम आपको उन सभी बातों के लिए धन्यवाद देते हैं, जो हमें आपकी उपस्थिति की याद दिलाते हैं।

— एस.बी. सैमुअल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा

MY DREAM CHURCH

(This essay got first prize in the Archdiocesan Essay Competition. Nikhil Singh brought laurels to the Parish. Hearty Congratulation. –Editor)

Who does not have dreams to make one's family better place to celebrate more, to cherish more, to add purpose and meaning in belonging to each other. So do I have my dreams about my church, which as Holy Father Pope Francis says is the **"the family of families"**.

As a youth I look forward to a Church that is willing to open its doors to the newness of the present age, preserving the morality and sacred traditions. We need to see and analyze the issues in the light of the effects of time and judge it not at the age old orthodox standards. Instead of calling the youth to its ways, the Church must gently breakthrough into the youth life style and renew it.

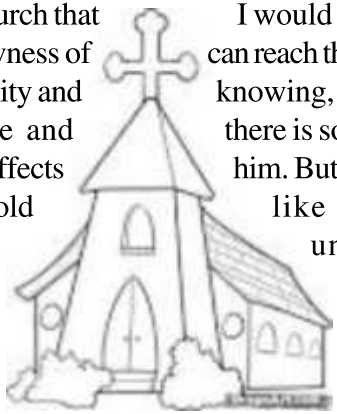

I dream of a Church that would rather challenge the youth to live the life of Christians against the culture of immorality. How can the youth or anyone be inspired without seeing someone **walk the talk**? I wish a Church that would be more powerful than the noise of the world that deafens the youth against the voice of truth. Also that the church, mother as she is, would stoop down to listen to her children without exception and also not to condemn them, with soulless following of the laws, for their failures.

It would delight me to see a Church that is not a mere systematic organisation but a family where the community life is not run by cold laws but with the warm laws of love, and every person is related with more humane and dignified personal love irrespective of gender, individual differences and social or financial status. It should be not be just soulless formal gathering but a mutual celebration of each others's presence. This will open doors to the spirit of walking together and mutual relationship. This spirit also invites us to give up narrow mindedness to build communion within the Church as well as with other denominations.

I would appreciate a Church, where one can reach the leaders with no second thought, knowing, believing and experiencing that there is someone who genuinely cares for him. But its not possible if the leaders live like high ranking officials, unapproachable, but as pope Francis portrays, as '**shepherds with the smell of the sheep**'. The sheep must experience that it is not received as a sub-creature but with a personal and selfless concern.

I dream to see a Church where the responsibilities are shared by all rather than to let everything be a personal show of the priest, religious or a chosen few. Because this creates a disinterest in others who could play an important, innovative and fruitful role in parish. However, it should also be the willingness of people to participate and contribute to the activities of the Church using the talents and calibres.

I dream, wish and pray for a Church that is dynamically '**one in heart and mind**' (cf. Acts 4:32), one in Jesus and one with each other.

- Nikhil Singh, Rosary Church
Bastar (Dt. Kasganj)

प्रभु का बलिदान

यिरमियाह 31:31 में प्रभु यह कहता है, ''वे दिन आ रहे हैं, जब मैं इस्राएल के घराने और यूदा के घराने के साथ एक नया विधान स्थापित करूँगा।''

हम यह देख सकते हैं कि यह बात ईश्वर ने यीशु मसीह के जन्म से 645 ईसा पूर्व कही थी, कि ''मैं एक नया विधान देने जा रहा हूँ।''

यिरमियाह 31:34 को हम इस वचन के माध्यम से देखते हैं कि प्रभु नये विधान के द्वारा हम से क्या कहना चाह रहा है। नया विधान अर्थात् प्रभु येशु मसीह। ''मैं उनके अपराध क्षमा कर दूँगा। मैं उनके पापों को याद नहीं रखूँगा।'' ये सब बातें पूर्णरूप से आप देख भी सकते हैं, जो कि परमेश्वर ने (645 ई.पू.) कही थीं। वह आज से लगभग 2000 साल पहले पूरी भी हो गयी हैं। प्रभु यीशु मसीह हमारे अपराधों व पापों के कारण क्रूस पर कुर्बान भी हुये। ख्रीस्तीय धर्म यह कहता है- ''क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)

आइये हम देखते हैं कि प्रभु यीशु मसीह हमारे लिए पिता से किस प्रकार विनती करते हैं। यूहन्ना 17:6 और 9 वचनों में ''तूने जिन लोगों को संसार में से चुनकर मुझे सौंपा, मैं उनके लिए विनती करता हूँ। मैं संसार के लिए नहीं, बल्कि उनके लिए विनती करता हूँ, जिन्हें तूने मुझे सौंपा है। क्योंकि वे तेरे ही हैं।''

इस वचन के माध्यम से हम देखते हैं कि प्रभु ने वह पीड़ा, दु:खभोग व यातनाएँ क्रूस पर किसी और के लिए नहीं बल्कि हम लोगों के लिए सहन कीं, क्योंकि धर्म ग्रन्थ कहता है- उसके कोढ़े खाने से हम चंगे हो गये।

क्रूस पर बलिदान के द्वारा ही आज हमें पूर्ण चंगाई व पिता परमेश्वर की कृपा व अनुग्रह प्राप्त हुआ।

प्रभु में प्यारे भाईयों-बहनों, आज हमें संसार में रहते हुए सांसारिक व अभिलाषा का जीवन नहीं बिताना चाहिए। बल्कि हमें प्रभु में दिन-प्रतिदिन बढ़कर प्रभु के क्रूस बलिदान को हर दिन याद कर व धन्यवाद के साथ प्रभु में बड़ी सावधानी से आगे बढ़ने की आवश्यकता है। हमें कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे हमारे प्रभु यीशु मसीह का बलिदान व्यर्थ हो जाए। ना ही प्रभु को हमारी वजह से ऐसा लगना चाहिए कि जो बलिदान दु:ख, पीड़ा, कष्ट प्रभु ने हमारे पापों व अपराधों के लिए सहन किये, वह व्यर्थ हो गये हैं।

यदि हम सांसारिक माता-पिता की बात करें तो वह हमें शिक्षा देते हैं, खाना देते हैं, रहने के लिए घर व समाज तथा संसार में रहने के लिए जो चीजें आवश्यक होती हैं, वह सब मुहैया कराते हैं। यदि हम सीधे शब्दों में बात करें, तो वह भी हमारे लिए एक प्रकार का त्याग व बलिदान करते हैं।

लेकिन जब हम उनकी आज्ञाओं का स्वयं पालन नहीं करते तो, वह स्वयं कहते हैं। हमने तुमको पढ़ाया लिखाया, अच्छी सुख-सुविधाएं दीं। इसके बावजूद तुम हमारे कहने सुनने में नहीं हो। इसका मतलब जो सब कुछ हमने तुम्हारे लिए किया वह सब कुछ व्यर्थ किया। अर्थात् जब सांसारिक माता-पिता को बुरा लग सकता है, जिन्होंने बस हमारे लिए थोड़ी बहुत सुख-सुविधाएं प्रदान कीं हमारे लिए क्रूस पर नहीं चढ़े, उन्होंने काँटों का मुकुट अपने सिर में नहीं पहना। तो भाईयो-बहनों हमारे विश्व मण्डल के प्रभु को कितना बुरा लगेगा? जब हम पिता व प्रभु की आज्ञाओं का पालन नहीं करते। इसलिए हमें सांसारिक अभिलाषाओं में गिरकर प्रभु के बलिदान को नष्ट व व्यर्थ नहीं होने देना है। इसलिए वही कार्य करें जो प्रभु की दृष्टि में उचित है। अगर कोई प्रभु के साथ चलने में कमजोर है, तो वह प्रभु से प्रार्थना या निवेदन करे।

— नरेन्द्र मैसी, सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा

"Sheep doesn't need repentance but a sinner does need..."

In the Gospels we very often read that whenever Jesus socialised with the sinners the Pharisees criticised him. They neither believed in His words nor in his deeds, for Jesus said, " I have come to call not the righteous but the sinners". They did not believe. And Jesus proved them through his deeds still they did not believe but rather they questioned and criticised him. It is in this context, as a response to this criticism, Jesus is presenting before them the parable of the lost sheep.

God's compassion and unconditional love

First of all this parable presents God as a merciful father who loves everyone. Everyone is precious in the sight of God.It shows how kind God is and how strong and intense in his love for the lost sheep that he is able to leave the 99 and go in search of that one lost sheep.Anyone who loses anything that he or she loves, will definitely search for it with utmost care and concern. That's what the merciful shepherd does because he loves us.

The redemptive work of Christ

A careful and reflective reading of this passage would show that this parable also indicates the incarnation of our Lord Jesus Christ and as a whole it points out to the redemptive work of our Christ.The great theologians interpret that leaving the 99 sheep and going in search of the lost one sheep refers to Jesus leaving the Father's throne and the society of angels and glorified saints, comes to the sinful world in search of the lost ones and for the redemption of the whole humanity.

Sheep can't repent but sinner must repent

There is a difference found between the parable and the message of this parable. The parable does not refer to a sheep which repents because it cannot repent and therefore it is the responsibility of the shepherd to search for it until he finds it and when he finds, he lays it on his shoulders and rejoices with his neighbours. But the message of this parable or the conclusion part of this parable does refer to the sinner who repents.

It is evident that repentance is necessary for salvation. Bringing the lost sheep back would mean that being brought back from the state of sin to the state of righteousness and that certainly requires repentance from the part of the sinner or the lost one. God is merciful but then this kindness of God, this mercy of God should not be misunderstood or taken for granted. St. Paul in his letter to the Romans 2: 4 questions very clearly, "Do you not realise that God's kindness is meant to lead you to repentance"? And so let's make this point clear that God's kindness is meant to lead us to repentance and let us not wait for God to search for us without doing our home work. So in this Lenten season let us break the wall of sin and enter into the door of God's mercy through the path of repentance and confession. And then finally our repentance will generate great joy in heaven.

- Fr. Babin Ryson, Rosary Church, Bastar

ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन एवं येसु मसीह का बलिदान

इस धरा पर सर्वप्रथम ईश्वरीय आज्ञा के उल्लंघन का दुष्परिणाम हमारे आदि माता-पिता ने भोगा है। यह बात हम सबको बखूबी ज्ञात है। ईश्वर ने उन्हें अदन वाटिका से निष्कासित कर एक खेत में रख दिया, क्योंकि इनको मिट्टी से गढ़ा गया था।

इसके पश्चात काईन ने अपने भाई हाबिल की हत्या कर दी थी। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि ईश्वर ने हाबिल की हत्या का बदला ये कह कर लिया, ''यदि तुम उस भूमि पर खेती करोगे, तो वह झाड़-झंकार पैदा करेगी। तुम पृथ्वी पर मारे-मारे फिरोगे। उस युग में मनुष्यों की दुष्टता चरम अवस्था पर थी। यहोवा परमेश्वर ने निर्णय किया कि मैं इस मानव जाति को पृथ्वी पर से मिटा दूँगा जिसकी मैंने सृष्टि की है। ईश्वर ने सम्पूर्ण मानव जाति पर नज़र दौड़ाई तो नूह एवं उसके परिवार के सिवाय कोई भी धर्मी नहीं मिला। जल प्रलय के बाद नूह एवं उसके बेटे-बहुओं की मानव जाति है, हमारे दूसरे आदि पूर्वज नूह एवं उसका परिवार ही है।

जब कनान देश में सात वर्ष तक अकाल पड़ा तो याकूब (इस्राएल) एवं उसके वंशज खाने-पीने की वस्तुओं की खोज में मिस्र आये। फिराउन ने यूसुफ को आज्ञा देकर इन्हें गोशेन प्रान्त में बसा दिया तथा वहाँ इन्होंने ज़मीन-जायदाद प्राप्त कर ली एवं इन पर यूसुफ की दया-दृष्टि बरकरार बनी रही।

जब मिस्र के राजा फिराऊन ने देखा, कि इस्राएलियों की संख्या तो निरन्तर बढ़ती ही जा रही है कहीं ऐसा न हो कि ये हमारे विरुद्ध लड़ने लगे, तो फिराउन ने इस्राएलियों को बेगार में लगा दिया। इस तरह इस्राएली लोग दासता की बेड़ियों में जकड़ गये। यहाँ ईश्वरीय चमत्कार देखिये -जितना अधिक अत्याचार फिराउन के पदाधिकारी इस्राएलियों पर करते थे, उतना ही अधिक जोश एवं शक्ति से इस्राएली बढ़ते और फैलते जाते थे।

इसी समय राज्य फिराउन ने एक आज्ञा निकाली कि यदि इस्राएली स्त्रियों के पुत्र पैदा हो, तो उसे मार देना परन्तु लड़की को जीवित रहने देना। जब मूसा का जन्म हुआ तो इब्रानी दाइयों शिफ्रा और यूआ ने उसे नहीं मारा। जब मूसा 2 या 3 माह का होगा तो उसकी माँ ने उसे एक टोकरी में रखकर नील नदी में बहा दिया। रोने की आवाज सुनकर फिराउन की पुत्री ने उसे ले लिया और यह कहते हुए बालक का नाम मूसा रखा- ''मैंने इसे पानी से निकाला है।'' जब मूसा बड़ा हुआ तो फिराउन के अधिकारियों का इस्राएलियों पर अत्याचार देखा नहीं गया, तो वह एक मिस्री को मारकर मिदयान देश भाग या। वहाँ जाकर उसका विवाह मिदयानी याजक यित्रो ने अपनी पुत्री सिप्पोरा से करा दिया। मूसा का एक लड़का हुआ, उसका नाम गेरशोम रखा इसका अथ हुआ- ''मैं विदेश में प्रवासी हूँ।''

जब मिस्र के पदाधिकारियों का अत्याचार कम होने के स्थान पर इस्रालियों पर अधिक बढ़ता गया, तो इस्राएलियों की दर्द भरी पुकार ईश्वर के पास पहुँची। प्रभु ईश्वर ने मूसा से कहा, ''मैंने इस्राएलियों का कराहना, रोना सुन लिया है। तुम इस्राएलियों के नेताओं को एकत्रित करो और उनसे कहो- मैंने तुम लोगों की सुधि ली है और मैं इस्राएलियों को मिस्र की दासता से निकाल कर उस देश ले जाऊँगा, जहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहती हैं।''

जैसा पवित्र बाइबिल में लिखा है- प्रभु ईश्वर ने मूसा के नेतृत्व में हारून की मदद से मिस्र के ऊपर अनेक विपत्तियां भेजकर लाल सागर के दो टुकड़ों में बाँटकर इस्राएलियों को सुरक्षित जगह पर पहुँचा दिया और मिस्र की सेना की सेना लाल सागर में जल समाधि बना दी।

प्रभु ईश्वर इस्राएलियों को फिलिस्तियों के देश मार्ग से होकर नहीं ले गया, जबकि वह सीधा सरल मार्ग था। प्रभु ने सोचा कहीं ऐसा न हो कि लोग युद्ध के डर से

पछताने लगें और वापिस मिस्र लौट जायें। प्रभु ईश्वर उन्हें निर्जन भूमि के मार्ग से घुमा फिरा कर वापिस लाल सागर की ओर ले गया तथा इस्राएली एताम के बाद सूर नामक उजाड़ प्रदेश पहुँचे। वहाँ वे प्यास से व्याकुल होने लगे तो मूसा ने लकड़ी को कड़वे पानी में फेंका तो पानी मीठा हो गया तथा इस्राएलियों ने अपनी प्यास बुझाई। जब मूसा इस्राएलियों को लेकर सिनाई की मरूभूमि पहुँचा और पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात बिताने के बाद दस नियमावली की दो पट्टियाँ लाये, तो इस्राएली भुनभुनाकर हारून का विरोध करने लगे। उन्होंने हारून से सोने का बछड़ा बनवाया और उसकी पूजा करने लगे। मूसा ने दस नियमावली की दोनों पटिट्यों को जमीन पर फेंककर उनके दो टुकड़े कर दिये। लेवियों ने 30 हजार व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया। अभी भी कुछ इस्राएली ईश्वर का भय मानने वाले थे। ईश्वर ने यह भी कहा, ''कोई भी खाली हाथ मेरे दर्शन को नहीं आयेगा।'' शायद यहीं से यह प्रथा प्रारम्भ हुई होगी, कि आज तक ईश्वर के मंदिर में कोई भी खाली हाथ नही आता।

जब इस्राएली कनान देश पहुँचने के नजदीक थे, तो नबी योशुआ ने याजकों से कहा, ''प्रभु की मंजूषा लेकर नगर की छः बार परिक्रमा करो और सातवीं बार परिक्रमा के बाद योशुआ ने लोगों से कहा, ''ललकारो! तुम्हें यह नगर दे दिया गया है।''

जब-जब इस्राएली ईश्वर की आज्ञा उल्लंघन करते थे तो प्रभु उन्हें अन्य राजाओं के हवाले कर देता था जिससे वे अपनी गलती पर सच्चे दिल से पश्चाताप कर परमेश्वर के सानिध्य में लौट सकें, क्योंकि ईश्वर चुने हुए लोगों को कभी भी नष्ट नहीं करना चाहता। यहाँ तक कि अन्य नबियों की भाँति नबी यिरमियाह ने अपने वचन में कहा है, ''तब मैं उनके कुकर्मों के कारण उनका न्याय करूँगा क्योंकि उन्होंने मेरा परित्याग किया है, पराये देवताओं को धूप चढ़ाई और अपने हाथ की कृतियों की आराधना की। मैं सोचता था, मैं कितना चाहता हूँ कि तुम लोगों के साथ अपने पुत्रों जैसा व्यवहार करूँ और तुमको एक ऐसा सुखद देश प्रदान करूँ जो किसी भी देश से सुन्दर है।'' यदि ईश्वर की चुनी हुई प्रजा ईश्वर की स्तुति एवं नियमों का उल्लंघन किया है याद रखो, वे भूख से पीड़ित होकर मर जायेंगे, उनके लिए कोई भी शोक नहीं मनायेगा और न कोई उनका दफन करेगा। वे खेतों में खाद की तरह पड़े रहेंगे; तलवार और अकाल से उनका विनाश होगा और उनके शव आकाश के पक्षी और पृथ्वी के जानवर खायेंगे (यिरमियाह 1:16, 3:19-20, 16:4)।

नबी यिरमियाह ने भी ईश्वर की प्रजा को बचाने का भरसक प्रयास किया परन्तु इंसान है कि मानता नहीं। प्रभु निरंतर तुम्हारे पास अपने सेवकों, नबियों को भेजता रहा, किन्तु तुमने नहीं सुना और ध्यान नहीं दिया। वे तुमसे कहते रहे, तुम में से प्रत्येक व्यक्ति कुमार्ग और कुकर्म छोड़ दे, तभी तुम इस देश में सदा के लिए रह जाओगे जिसे प्रभु ने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वकों को प्रदान किया है, तुमने मेरी एक भी नहीं सुनी बल्कि तुमने अपने आचरण से मेरा अपमान किया है, इससे तुमने अपनी ही हानि की है (यिरमियाह 24:4-7)। यहाँ मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि संख्या में 70 लोग ही (इस्राएली) मिस्र में आये थे (जैसा धर्मग्रंथ कहता है) तथा 430 साल राजा फिराउन की गुलामी की दासतान के बाद इस्राएलियों को प्रभु मूसा के नेतृत्व में तथा हारून की नैतिक भावना के साथ लाल समुद्र को पार कर मिस्र से बाहर आये और उनको 10 या 11 दिन की दूरी के बदले प्रभु ने उन्हें 40 साल मरूभूमि में रहने के बाद कनान देश पहुँचाया। प्रभु ने इस्राएलियों की हर सम्भव मदद की।

अब प्रश्न उठता है जब कनान देश जाने के लिए 10 या 11 दिन की यात्रा थी तो मरूभूमि में 40 साल क्यों? क्योंकि इंसान आज का हो या उस जमाने का, इंसान अपने फायदे के लिए कार्य करता है और सोचता है यदि प्रभु इस्राएलियों को कनान देश सीधे रास्ते से होकर ले जाता तो फिराउन इस्राएलियों को पकड़कर पुनः मिस्र देश ले जाकर गुलाम बना लेता। वो अपने मंसूबों में कामयाब हो जाता।

मरूभूमि की तरफ जाने वाला रास्ता लाल समुद्र से होकर गुजरता था। यहाँ पर ध्यान देने वाली बात है, हम सब ईसाई ईश्वर की चुनी हुई प्रजा हैं तो क्या इस्राएलियों को कुछ चिन्ह चमत्कारों पर विशस तो करना चाहिए था। इंसान वही करता है जो उसे क्षण मात्र का सुख प्राप्त करता है। पवित्र ग्रन्थ कहता है, संसार में पाप का आगमन हमारे आदि माता-पिता के द्वारा हुआ और पाप मुक्ति का रास्ता प्रभु येशु मसीह के द्वारा प्रशस्त हुआ।

प्रभु येसु मसीह जीवन दाता है। रक्षक है। एक अच्छे दोस्त से भी लाख गुना अच्छा है। हमारे पाप में बार-बार गिरने पर भी हमें संभालता है, स्वीकार करता है, भयंकर से भयंकर डर या बीमारी से भी चंगा करता है। हमें वह सफल बनाता है। समाज की मुख्यधारा से जोड़ता है, प्रभु येसु मसीह बदलने वाला नहीं, बल्कि जीवन बदलने वाला ईश्वर है। परमेश्वर का इकलौता पुत्र है जो पिता की आज्ञानुसार अपने आप को हमारे पापों की खातिर काठ के क्रूस पर बलिदान हुआ, मृतकों में से तीसरे दिन जी उठकर पिता परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा है। वह हमारी दैनिक क्रिया-कलापों को देखता है। जब हम पाप करते हैं और बार-बार पाप करते हैं तो हमें पाप क्षमा तो मिल जाती है, जब हम सच्चे दिल से अपने पापों से मन फिराकर पश्चाताप करते हैं तब। हमारे अनजाने में किये पापों को ईश्वर माफ करता है यदि जानबूझकर पाप में गिरते हैं तो....हम स्वयं विद्वान हैं, समझ सकते हैं।

ईश्वरीय नियम एवं आज्ञा उल्लंघन के दुष्परिणाम क्या होते हैं; हम जान गए हैं लेकिन पापों से निजात दिलाने के लिए हमारे प्रभु येसु हमारे साथ, हर क्षण साथ रहते हैं और पवित्रात्मा हमें सम्भालता है और बुद्धि, ज्ञान, विवेक देता है तथा शारीरिक, मानसिक एवं विभिन्न प्रकार की सांसारिक समस्याओं से स्वतन्त्र करती है।

नबी एज़ेकिएल कहते हैं कि यदि पापी, अपना पुराना पापमय जीवन त्यागकर मेरी सब आज्ञाओं का पालन करता, धार्मिकता तथा न्याय के पथ पर चलने लगता है, तो वह अवश्य जीवित रहेगा, मरेगा नहीं। उसके सब पापों को भुला दिया जायेगा और वह अपनी धार्मिकता के कारण जीवित रहेगा। क्यों मैं दुष्ट की मृत्यु से प्रसन्न हूँ? क्या मैं यह नहीं चाहता कि वह अपना पापी मार्ग छोड़ दे और जीवित रहे? किन्तु यदि भला मनुष्य अपनी धार्मिकता त्यागकर दुष्ट की तरह घृणित पाप करने लगता है तो क्या वह जीवित रहेगा? किन्तु यदि भला मनुष्य अपनी धार्मिकता त्यागकर पाप करता है यदि कोई पापी अपना पापमय जीवन त्यागकर धार्मिकता और न्याय के पथ पर चलने लगता है, तो वह अपने जीवन को सुरक्षित रखेगा। यदि उसने अपने पुराने पापों को छोड़कर निश्चय किया है तो वह अवश्य जीवित रहेगा, मरेगा नहीं।

मोहनसिंह (जैतवाल), सेंट फ्रांसिस चर्च, हाथरस

चलचित्र

सुनो क्या कहते हैं चलचित्र?
बीते हुए पलों को, अपने दामन में संजोए
रहते हैं चलचित्र।

बचपन की खट्टी-मीठी यादों का
कुछ अनसुलझी पहेलियों का
खजाना है चलचित्र।

माँ-बाबा के आँगन की,
स्कूल के प्रांगण की तस्वीरों का
संग्रह है चलचित्र।

कभी पानी में नाव चलाने का
कभी पेड़ पर चढ़ जाने का।
ऐसे कितने ही छुए-अनछुए पलों का
हमराज है चलचित्र।

कभी तारे गिनने का
कभी तितली पकड़ने का एक अनूठा
अनुभव है चलचित्र।

अंजलीना मोसस, संत जूड पल्ली, आगरा

Thank God, I complete 29 years in the North Indian Soil

For everything, I give thanks, for this was God's will for me in Jesus Christ.

After Fr. Kuruvilla Kokattu, Fr. Jose Poovathinkal and Fr.Thomas Ezhikadu now I have the rare distinction of completing 29 years in the North Indian soil, in Etawah Mission, serving the people as a Priest. During my Seminary training, I never thought I would be made to come to Etawah or even when I came to Etawah I did not come to stay here but to leave after a few years. However, the Almighty had His plan. People who came to stay here, left, and I who came to leave, continues to stay happily. Now, as I look back, I feel an overwhelming rush of happiness and satisfaction for I could spend 29 years here. And if the Almighty allows I wish to spend the rest of my life too working under Etawah Mission, at least till I can manage things on my own, which I am sure will give me a greater satisfaction of having done something different for people different.

Time flies but memories remain forever. With Fr. Joseph Mathoor I reached Etawah, exactly 29 years ago, on March 16, 1993, thus making this day the Silver Jubilee Day of my life in Uttar Pradesh. Fr. Joseph Mathoor is no more. It was difficult for me to come to terms with the premature death of a friend, a colleague and a good priest. The after tremors of Fr. Isaac Kochupura's death shook everyone. He gave me an initiation into this mission life, and, all my life I should remain indebted to him.

Here at Etawah I see 29 years behind me. First seven years were spent at Etawah, the next 6 at Dibiyapur and then 8 years at Auraiya. Then went back to Dibiyapur for another 3 years and one year at Mainpuri and now for the last 4 years I'm in Sanjos Dibiypur. My life at different stations gave me many opportunities to be in touch with people of different castes, creeds, religions, ideologies and outlook. I could also be associated with many parents, Rev. Fathers, Rev. Sisters, Teachers and students who presented me with rich life long experiences.

Jubilee of any sort is an occasion of thanksgiving. Special occasions are for thanking people who have been special in life. I remember with gratitude Archbishops Mar Joseph Powathil and Mar Joseph Perumthottam of Changanacherry, Archbishops Most Rev. Dr. Cecil D'Sa, Most Rev. Dr. Vincent M. Concessao, Most Rev. Dr. Oswald Cardinal Gracias, Most Rev. Dr. Albert D'Souza, Most Rev. Dr. Raphy Manjali of Agra , Mar. Raphal Thattil Bishop of Shamshabad and Mar. Thomas Tharayil. I owe much to Rev. Fr. Kuruvilla Kokattu, whom I consider my guide and mentor, Rev. Fr. Jose Poovathinkal, Rev. Fr. Thomas Ezhikad, Rev. Fr. James Palakal all the priests and sisters of Etawah Mission, my friends at Changanacherry and Agra in helping me keep moving. The parents, teachers and students and my loving parents and all near and dear ones have made my life in the Mission very pleasant and comfortable and I keep them all in my prayers.

Dear God, in your strong hands, I place my life today, choosing to depend on you to light and guide my way.

- Fr. Raju Koippally, Etawah

ख्रीस्त के द्वारा, ख्रीस्त में पास्का का आनंद

जिन्दगी हर कदम एक नई जंग है। इस जंग में बहुत सारे पलों से होकर गुजरना पड़ता है। हमें सुख-दु:ख का सामना करना पड़ता है। जो इस सुख-दुख के खेल में जीतता है, वही सच्चा विजेता कहलाता है। हर वर्ष हम पास्का पर्व मनाते हैं। यह पास्का पर्व हमें ऐसे ही एक महान जीवन-मृत्यु के विजेता अर्थात् प्रभु ईसा की विजयगाथा पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है। वह स्वयं ही पास्का के महानायक हैं।

हम सभी लोग अपनी इस जिंदगी में चार तरह के लोगों से सामना करते हैं। जैसे कि भले लोग, ढोंगी लोग, धोखेबाज लोग तथा बेगाने लोग। अगर हम भले लोगों के जीवन पर चिंतन करें तो वे वचन और कर्म के पक्के होते हैं, और प्रभु ईसा की शिक्षानुसार अपना जीवन जीते हैं। ढोंगी लोग ऐसे होते हैं मानो प्रभु ईसा के समय के फरीसी, शास्त्री तथा याजक लोगों की तरह जो ईश्वर की शिक्षा मुख से देते हैं और उनके मुख से मधु की नदी भी बहती है, लेकिन उनका हृदय प्रभु से बहुत दूर होता है। ऐसे लोग मानो कब्रिस्तान की कब्रों की तरह होते हैं जो बाहर से सुंदर लेकिन अंदर से सड़े हुए कीड़ों से भरी होती हैं। धोखेबाज लोग ऐसे होते हैं जो दूसरों के सुख में साथ होते हैं, लेकिन दु:ख में पीठ दिखाकर भाग जाते हैं और दु:ख का कारण भी बनते हैं। साथ ही साथ वे पीठ पीछे हंसी उड़ाते हुए इतना तक कह देते हैं कि कोई मरता है तो मरने दो। ऐसे लोग विश्वासघाती यूदस से भी गिरे हुए होते हैं। बेगाने लोग ऐसे समूह में रखे जा सकते हैं जिन्हें आसपास के लोगों को देखते हुए भी, उनके दु:खों को जानने के बावजूद भी अंजान बन जाते हैं। ऐसे लोगों के लिए धर्मग्रंथ कहता है कि वे न तो गर्म हैं और न ही ठंडे। मैं उन्हें अपने मुख से उगल दूँगा। कहने का मतलब है वह किस दिशा में जा रहे हैं, उन्हें कुछ पता ही नहीं चलता है। ऐसे लोग सिर्फ और सिर्फ पशु समान होते हैं।

जब हम ढोंगी, धोखेबाज तथा बेगाने लोगों द्वारा अपनी इस रोज की जिंदगी में सताये जाते हैं तो घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि जब हम सच्चाई के लिए दु:ख भोगते है तो हम ईसा के दु:खभोग के सहभागी हो जाते हैं। इस तरह जीवित होते हुए दु:खों के बोझ से जब मरते रहते हैं, तो हम ईसा में मर जाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि जब हम ख्रीस्त के साथ दु:खभोग सहते हुए मर जाते हैं तब हम उनके पास्का रहस्य के भागीदार बन जाते हैं।

जब हम पास्का की रोटी के रूप में प्रभु ईसा की बुलाहट को स्वीकार कर स्वयं को उनके हाथों में सौंप देते हैं जब प्रभु हमें अपनी कृपाओं से भर देते हैं और हम पवित्र रोटी की तरह प्रभु के साथ और प्रभु में अपने आप को दूसरों के दु:खों में तोड़कर अर्थात् आध्यात्मिक दु:खों तथा मृत्यु को प्राप्त कर पीड़ित लोगों के आँसुओं को मिटाकर उनके चेहरों पर मुस्कान लाते हैं तो हम प्रभु ईसा के द्वारा प्रभु ईसा में पास्का के अनंत आनंद को प्राप्त करते हैं। वह आनन्द जीवित प्रभु की तरह अमर है।

—ब्रदर मितेश मार्टिन, मसीह विद्यापीठ, आगरा

ईस्टर संयुक्त प्रभात फेरी

(Organised by ADCC, Agra)
On 17th April, 2022 at 5:00 a.m.
Venue: St. George's Cathedral

इस बार शोभायात्रा/प्रभातफेरी सेंट जॉर्जेज़ कथीड्रल चर्च के निकटवर्ती क्षेत्रों में परिक्रमा करके पुन: वापिस सेंट जॉर्जेज़ कथीड्रल पहुँचेगी, जहाँ ईस्टर के अवसर पर विशेष प्रार्थना सभा एवं आशीष समारोह होगा।

— नॉरमन थॉमस (सचिव, ए डी सी सी)

The World's 11 Craziest Easter Traditions

1. **Whip-cracking in the Czech Republic and Slovakia**
   If you're a woman and you find yourself in the Czech Republic or Slovakia on Easter Monday, it is perhaps best to stay indoors. Local men and boys roam the streets with gaily decorated willow switches, usually adorned with ribbons, looking for girls to 'lightly' whip.The whipping is not intended to be painful, but instead is meant to encourage good health and beauty. You may feel otherwise.
2. **The butter lambs of Russia**
   In Russia, the Easter meal is accompanied by a knob of butter fashioned into the shape of a lamb. It dates back to ancient times when it was considered a lucky omen to meet a lamb.Why a lamb? Because you can be certain it's not Satan in disguise. Old Beelzebub can take on the form of all animals except the lamb because of its religious symbolism.
3. **The Easter Bilby from Australia**
   In an attempt to raise awareness about the dwindling Bilby population, confectioners in Australia have taken to making chocolate likenesses of this small rabbit-size marsupial. Aussies can scoff at will, knowing that every bite they take is helping to save an endangered species.
4. **The world's biggest Easter omelet in France**
   On Easter Monday, the residents of Haux usually crack more than 4,500 eggs into a gigantic pan to create a massive Easter omelet that serves over 1,000 people. Each family breaks the eggs in their homes in the morning and they gather in the main square where the eggs are cooked for lunch. And dinner. And breakfast the next morning...
5. **A time to splash out, Hungary**
   In Hungary, women dress up in traditional clothes on Easter Sunday and get splashed with water. Uncomfortable, yes. But it certainly beats getting whipped.
6. **The witches of Easter-wick in Finland**
   Halloween comes early to Finland as children dress up as witches and wander the streets with broomsticks on a hunt for treats. The tradition is said to have come from the belief that witches would fly to Germany and cavort with Satan. Bonfires are meant to scare them away.
7. **Tobacco trees in Papua New Guinea**
   Chocolate isn't much use in the steamy jungles of Papua New Guinea, so Easter trees at the front of churches are decorated with sticks of tobacco and cigarettes instead. These are handed out after the service.
8. **Crucifixion and flagellation in the Philippines**
   In the Philippines some devout Catholics have taken to the practice of self-crucifixion and self-flagellation on Easter. Their thinking is that it helps purify them and cleanse them of the sins of the world. The Roman Catholic Church is not keen on the idea and has been actively trying to discourage this practice, without much success.
9. **The Easter Bunny sees red in Greece**
   Easter is known around the world for multi-

coloured, decorated eggs. But in Greece you will find only red eggs. Red is the colour of life, you see, as well as a representation of the blood of Christ. From ancient times, the egg has been a symbol of the renewal of life, and the message of the red eggs is victory over death. Got it?

10. Criminal intent in Norway

Easter time is crime time in Norway. Television channels run crime shows and a slew of new detective novels are commissioned to come out just before Easter. People across the country escape into their mountain cabins and spend the weekend with the 'whodunnit' television shows or books. Even the milk cartons carry short detective stories on their side during the season. The phenomenon was triggered by the immense popularity of a crime novel in 1923, set on the Bergen railway.

11. The Great Easter Bunny Hunt in New Zealand

While the rest of the world hunts for Easter eggs hidden around the house, the good folk of Otago grab their guns for the annual 'Great Easter Bunny Hunt'. The idea is to rid farmlands of 'invasive pests', with over 500 hunters vying for the coveted trophy and the $NZ 3,500 prize money. With over 10,000 rabbits meeting their maker each year, the Easter Bunny sensibly gives this corner of New Zealand a miss.

Courtesy: Fr Vineesh Joseph Aduki (Mathura)

Who He Was?

He was the constant seeker of the least and lost
Of the people who drifted from the path of truth
Who were drooping in darkness and stumbling
Unable to view a ray of light in their bumbling.

Sure he was neither a cop nor a constable
Who follows the culprit to imprison and punish
Well, He was neither a CID nor a secret police
Who secretly moves in disguise to trap a convict.

He was the Baby of Bethlehem in the manger
He was the Man of Galilee without a shelter
He is none other than Jesus, the Lord and Savior
Who gave His life as a ransom for us on Calvary.

"The sick is in need of a physician, not the healthy
I came in search of sinners, not the righteous."
He affirmed the essence of His mission by these.
Yes, Lent is a time to obtain His boundless mercy.

Sr. Thelma, UMI
Nirmala Provincialate, Greater Noida

पृष्ठ 6 का शेष

प्रभु येसु का पुनरुत्थान हमें एक धन्य आशा भी प्रदान करता है, कि हम भी अनन्त जीवन के लिए अवश्य जीवित होंगे और पुनरुत्थान और अनन्त जीवन प्रभु येसु में ही है। जो प्रभु येसु में बना रहेगा वह नई सृष्टि है अत: हम गर्व से कहें, मसीह मुझमें जीवित है और उसके संदेश मेरे जीवन से प्रकट होते हैं।

मित्रों! तो दिल पर रखे इस पाप रूपी भारी पत्थर को हटा दो। हृदय रूपी कब्र को खाली कर दो। जैसे हमने मिट्टी से परमेश्वर के प्रतिरूप को धारण किया है, वैसे ही उसके पुनरुत्थान में सहभागी होकर स्वर्गिक रूप को भी अवश्य धारण करेंगे। **पुनरुत्थान पर्व की आप सबको असीमित बधाइयाँ।**

नहीं रहे हमारे प्यारे फादर मैथ्यू थुंडियिल

आखिरकार... हमारे प्यारे फादर मैथ्यु थुंडियिल कैंसर से जंग हार गए। 53 वर्षीय फादर विगत एक डेढ़ वर्षों से कैंसर से पीड़ित थे। मेडिकल टीम ने उन्हें बचाने का बहुत प्रयास किया, लेकिन विधाता को और कुछ ही मंजूर था। उन्होंने विगत 29 मार्च को सायं 8.45 बजे केरीतास अस्पताल, केरल में आत्मसमर्पण कर दिया।

स्वभाव से अत्यन्त मृदुल भाषी, सबके मददगार और एक आदर्श पुरोहित के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जायेगा। बहु विधि प्रतिभा के धनी फादर मैथ्यु को एक खुश मिजाज़ व्यक्ति के रूप में सदा स्मरण किया जायेगा। उनके यूँ अनायास चले जाने से जो खालीपन उत्पन्न हुआ है उसे आसानी से नहीं भरा जा सकेगा। ऐसी धनी प्रतिभा के महापुरुष विरले ही इस धरती पर जन्म लेते हैं।

उनके साथ मेरी बहुत सी मधुर यादें जुड़ी हुई हैं। मुझे भलीभांति याद है कि मेरे माइनर सेमीनेरी के प्रथम वर्ष 1984 में हम केवल 7 छात्र थे। श्रद्धेय फादर राफी मंजलि हमारे गुरुकुलाचार्य थे। लेकिन अचानक ही अगले वर्ष 1985 में हमारी संख्या बढ़कर 27 हो गई। उसी भीड़ में फादर सन्नी कोट्टूर और मैथ्यु थुंडियिल भी थे। हमने पहली बार सेमीनेरी में गुरुकुल दिवस का आयोजन किया था। एक बार ब्रदर मैथ्यु को साइकिल पर बैठाकर एअर फोर्स स्टेशन ले गया था। उनके कोई परिचित वहाँ थे। मैंने उन्हें हिन्दी और अंग्रेजी की एक्स्ट्रा कोचिंग दी। वह एक मेधावी छात्र थे। कई बार हम घटिया आजम खाँ स्थित जीवन सिनेमा में पिक्चर देखने गए।

फादर मैथ्यु प्यार से मुझे मूने कहते थे... प्रधानाचार्य के रूप में उन्होंने सेंट डॉमिनिक स्कूल में मेरे अनुरोध पर एक टीचर को जॉब दी और एक-दो बच्चों को अपने स्कूल में दाखिला भी दिया था। मेरे पर्सनल इस्तेमाल के लिए उन्होंने एक कम्प्यूटर सैट भी दिया था। इतना सब कुछ उन्होंने मेरे लिए किया तो मैं कैसे उन्हें भुला सकता हूँ। मैं समझता हूँ कि हमारे बहुत से साथियों को भी इसी तरह का अनुभव हुआ होगा।

प्रिय फादर मैथ्यु आराम से सोइए! शांति से सोइए, जब तक कि कयामत के दिन हम फिर से न मिलें!!

— फादर मून लाज़रस

Thus spake our Fathers

"Here goes the noble soul of Rev. Fr. Mathew Thundiyil unto the bosom of the Father, a place reserved for good and faithful soul. Rightly, we may say about Mathew Thundiyil; he gave his strength to the weak, substance to the poor and his heart to God. May his noble and holy soul rest in peace with Almighty."

- Fr. Dennis D'Souza

"Mine was a family relation with Fr. Mathew. His late father considered me his " elder Mathew" and so Fr Mathew was a younger brother to me. I have lost a great person of support, care & consolation. May his soul rest in peace in the bosom of the Father."

- Fr. Mathew Kumbloomotil

"Rev. Fr. Mathew was a sincere, dedicated, loving and faithful in all his responsibilities. He silently worked in different places in our Archdiocese. He also silently suffered because of his ailments. We will surely miss this Brave Warrior. May God grant eternal peace to his soul."

- Fr. Andrew Correia

Tribute to Rev. Fr. Mathew Thundiyil

A Tearful Adieu by the Peterians at Bharatpur

Rev. Fr. MathewThundiyil, a highly renowned and revered priest with a passionate desire to serve God and humanity whose splendid preaching and teachings have been resonating for the past 26 years in the Archdiocese of Agra fell silent on 29th March 2022. Braving heavy odds with his perseverance, resilience and never to say die spirit he was born into heavenly life on 29th March 2022 at 8.45 p.m.

Born on 6th December 1969 as the son of late Mr. T.U. Joseph and Mrs. Aleyamma Thundiyil at Kumarakomin, Kerala, he set himself apart for using his precious time and talents in the service of the Lord and that of the humanity. At a very young age of 16 in July 1985 he joined St. Lawrence Minor Seminary, Agra and was ordained a Priest on 1st May 1996 at his home parish.

During his 26 years of faithful steadfast stewardship in his priestly ministry, he rendered meritorious service in many churches and schools of the Archdiocese of Agra. He has also held prestigious posts like the Professor of Philosophy, Dean of Mathura Deanery etc. His theological and ecclesiastical doctrines appealed to many.

Rev. Fr. Mathew was an epitome of strong faith and courage. He had a way of his own in storm and calm. Even when he was undergoing treatment for cancer, he took over the reins of administration as the principal of St. Peter's School Bharatpur on August 6th 2021 and at the same time he was appointed as the parish priest of St Peter's Church, Bharatpur. The Peterians found in him an upright guide and we were happy to work under his brilliant and skilled guidance. He was filled with energy and enthusiasm and the walls of the school and church resonated with his reverberating voice of authority, confidence, understanding and knowledge.

Though Rev. Fr. Mathew was with us for a short span of eight months, he has left behind a mountain of memories. Even when he was battling the deadly disease and was going through unbearable pain, he appeared to be the most cheerful person in the whole campus.

Rev. Fr. Mathew fully succumbed to the will of his Creator. His last three months were spent with his beloved mother and dearest brothers and sisters who cared for him dearly. But with tearful eyes they watched him suffer and saw him slowly fading away. The love, care and prayer they poured on him could not make him stay. God Almighty saw him getting tired, a cure was not possible. So He put his arms around him and whispered "come to me, I shall give you eternal rest". When everyone mourns over his untimely demise, like a brave warrior he tells them:

" I have fought the good fight
I have finished the race
I have kept the faith " (Timothy 4:7)

Rev. Fr. Mathew was laid to eternal rest with boundless love and sincere prayers on 2nd April 2022 at his home parish in Kerala. Condolence messages and prayers poured from everywhere. It was a rare funeral ceremony attended by the Archbishop of Agra Most. Rev. Raphy Manjali, Most. Rev. Mathew Mulakkattu, the Archbishop of Kottayam, many other bishops of other denominations, hundreds of priests, nuns and thousands of believers.

Continued on page .....

फादर मैथ्यू थुंडियिल को सुपुर्दे-खाक किया गया

कुमरेगाँव (कोट्टायम), 2 अप्रैल। हमारे अति आदरणीय और श्रद्धेय फादर मैथ्यु थुंडियिल का शव पूर्ण श्रद्धाभक्ति एवं धार्मिक रीति रिवाज के अनुसार उनके पैतृक गाँव कुमरेगाँव (जिला कोट्टायम, केरल) में खाके सुपुर्द कर दिया गया। उनकी अंत्येष्टि (दफन धर्मविधि) महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने सम्पन्न कराई। इस अवसर पर कोट्टायम कनाया धर्मप्रांत के आर्चबिशप मैथ्यु मूलाकट्ट, फादर थुंडियिल के रिश्तेदार, फादर थॉमस करिमपुमकालायिल, आगरा के प्रतिधर्माध्यक्ष श्रद्धेय फादर जोसफ डाबरे के साथ लगभग 33 पुरोहितों ने भाग लिया, जिनमें करीब 20 आगरा महाधर्मप्रांत से, 8 चंगनाचेरी महाधर्मप्रांत से थे।

53 वर्षीय फादर मैथ्यु विगत डेढ़-दो वर्षों से कैंसर से जूझ रहे थे। लॉकडाउन के चलते उन्हें उचित इलाज भी समय से नहीं मिल पाया। जब बीमार की गंभीरता का आभास हुआ, तब तक काफी देर हो चुकी थी। फादर मैथ्यु ने तो मानो बहुत पहले ही अपने आप को पिता के पास जाने के लिए आध्यात्मिक रूप से तैयार कर लिया था और अनन्त: रोगी मलन संस्कार ग्रहण कर 29 मार्च की रात्रि करीब पौने नौ बजे स्वयं को प्रभु के हाथों में समर्पित कर दिया।

उनकी दफन क्रिया में हजारों लोगों ने भाग लेकर अपनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर अपने सशक्त और प्रभावशाली प्रवचन में महाधर्माध्यक्ष डॉ राफी मंजलि ने मलयालम, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के मिश्रण में विश्वासियों को सम्बोधित करते हुए बताया, कि ''फादर मैथ्यू एक सम्बन्ध स्थापित करने वाले व्यक्ति थे। (He was a man of relationship) वे अपने जीवन में जिम्मेदारियों को बड़ी गंभीरता से लेते थे (He gave lot of importance to responsibilities) यहाँ अस्पताल के पलंग से भी निरन्तर अपनी पल्ली और स्कूल के बारे में चिन्तित थे। हर बात की जानकारी लेते रहते थे। इन दिनों उत्तर भारत में सभी स्कूलों में परीक्षाएं चल रही हैं, उन्होंने केरल आने से पहले भरतपुर अपने स्कूल की सारी जिम्मेदारियां और व्यवस्थाएं जिम्मेदार लोगों को सौंप दी थीं। (He was man of duty) कर्तव्यनिष्ठा तो वे थे ही, साथ ही धर्मनिष्ठ भी (Man of prayer) उनकी प्रार्थना अंत में गुहार बन गई। जब रोग-वेदना असहनीय हो जाती है, तो व्यक्ति की सारी पीड़ा उसकी प्रार्थना में गुहार बनकर फूट पड़ती है।'' स्वामी जी ने आगे अपने प्रवचन में कहा, ''फादर मैथ्यु यह ट्रान्सफर (तबादले) का समय है, तुम कहाँ जाना पसन्द करोगे?'' फादर ने तपाक से जवाब दिया, ''आप जहाँ चाहें, भेज दें, मैं वहीं रहकर काम करूँगा। मैं अंतिम समय तक निष्क्रिय नहीं रहना चाहता।'' फादर मैथ्यु एक खुशदिल इंसान, आदर्श पुरोहित एक अच्छे मित्र और आदर्श मसीही थे।

हम आज दु:खी हैं, कि फादर मैथ्यु हमारे बीच नहीं रहे, किन्तु हम जानते हैं कि उन्होंने पिता की पुकार को सुन लिया है और वे स्वर्ग पहुँच गए हैं, जहाँ न मृत्यु है, न दु:ख-पीड़ा, वेदना है... केवल ज्योति है - ईश मेमने की दिव्य ज्योति है। वह स्वर्गीय येरूसालेम की ओर बढ़ रहे हैं। उनकी अपनी पीड़ा और दर्द अब समाप्त हो चुके हैं।'' इतना कहकर आर्चबिशप भाव विह्वल हो उठे, उनकी आंखें गम के नम से बोझिल होकर स्वत: बन्द हो गईं। कुछ श्रण बाद हिम्मत करके स्वाजी ने पुन: कहा, ''हम उनकी आत्मशांति के लिए प्रार्थना करें, कि वह अनन्त काल तक प्रभु की उपस्थिति में बनी रहे... और हम सभी जो यहाँ इस धर्मविधि में भाग ले रहे हैं, अपनी पहचान और बुलाहट के अनुसार अपना जीवन जी सकें।''

शेषांश पृष्ठ 25 पर

Meet Our New Priests

☐ **Deacon Kulkant Chhinchani**

Motto: "Working for the poor children and youth empowerment"

Rev. Deacon Kulkant Chhinchani was born on April 11, 1987 at St. Mary's Parish Chandiput, Gajapati (Odisha). His parents are late Sri John and Smt. Carmila Chhinchani. He has two elder brothers. He is the third in the family. His second brother is a Priest, Rev. Fr. Peter Chhinchani belonging to the Diocese of Berhampur.

He did his primary studies at Bhuvneshwar. He had a great desire to be a missionary priest and work in a mission. Thus, he joined St. Lawrence Seminary, Agra in 2005. His own brother priest Rev. Fr. Peter Chhinchani is his vocation promoter. Most Rev. Dr. Albert D'Souza, the then Archbishop of Agra Archdiocese has been a great ideal and model of inspiration for him.

He did his Spritual Orientaion and Philosophy studies simultaneously at St. Francis Xavier's Regional Seminary(Masih Vidyapeeth), Etmadpur, Agra. He did his Regency from 2011-2012 at St. Joseph's Mission, Kasganj under the able guidance of Rev. Fr. Shiju Pallipadan.

Then he took a break and did his B.Ed from Dr. B.R. Ambedkar University, Agra in 2015. Meanwhile, he prepared himself for U.P.S.C:ALS (Delhi). Once again he returned to the Lord and did his theology studies from Gyan Bharti Gurukul, Varanasi and partially from Vidya Jyoti College, Delhi from 2017-2020.

He was ordained deacon on 25 July, 2021, at St. Joseph's Church, G. Noida. He did his Diaconate Ministry at KNEUS, Greater Noida under the able guidance of Rev. Fr. Sebastian K. and Fr. John D'Cunha. Partially he did ministry under the guidance of Rev. Fr. Roshan D'Silva at St. Michaels Church, Anupnagar, Mathura

May God bless him.

☐ **Deacon Asime Beck**

Rev. Deacon Asime Beck was born on May 21,1993 in a devoute family of Sri Milread and Smt. Karmela Beck of Katkahi Parish Bando Toli, Diocese of Gumla, Jharkhand. He is the second in his family. From the very beginning his parents taught him the moral and Gospel values. He did his primary studies in Roman Catholic Prathmic School, Janawal. When he was studying in Std 7 he was very much inspired by the simple and prayerful life of a priest in his parish. Asime's village is far from the Parish thus, the priest used to come to celebrate the holy Mass once in a while. Then, he used to think, when he would become a priest and celebrate the holy Eucharist daily. His grandparents were a great model of Spirituality. They always encouraged and supported him.

He did his secondary studies from Barwas High School, Chainpur in 2004. On completing High Scgool, he expressed his heart felt desire to join the Seminary. His beloved mother wanted him to join Jhansi Diocese, but it didn't work out some how. But then through the intervention of one priest from the Archdiocese of Agra, namely Rev. Fr. Tony Almeida he joined St. Lawrence Seminary, Agra in 2009. Rev. Fr. Joseph Dabre was the Rector there and Rev. Fr. Dominic

George (Amit) Vice Rector. Fr. Mathew (Joby) Kanjarathinkal was on the staff, whereas Rev. Fr. Eugene Moon Lazarus was his Spiritual Director.

On successfully completing one year Minor Seminary Formation he was sent to Assisi Convent School, Etah to do his 11th and 12th studies, under the able guidance of Rev. Fr. Mathew Kanjirathinkal.

Then on completing his Minor Seminary studies he was promoted to do his Spiritual Orientation and Philosphy Studies to St. Francis Xavier's Regional Seminary (Masih Vidyapeeth), Etmadpur, Agra. Later he was asked to do Regency at Savio Nav Jeevan Bal Bhavan, Aligarh under the able direction of Rev. Fr. Jose Akkara. This mission experience helped him to strengthen the purpose of his mission to the priesthood.

After completing Regency, he did Theology studies for four years at St. Joseph's Regional Seminary, Agra. He did his Diaconate Ministry at St. Lawrence Minor Seminary, Agra and partially at St. Patricks Church, Agra Cantt. Deacon Asime beck will be ordained priest in the month of May at his own home parish. **The Agradiance** wishes him good luck and all God's blessings for his future priestly ministry. The motto of his life is "**Love one another, as I have loved you**".

☐ Dn. Sachit Kerketta

"You didn't choose me, but I chose you and appointed you so that you might go and bear fruit, fruit that will last." (John 15:16)

My name is Brother Andrew Sachit Kerketta. I hail from St. Thomas' Church, Sikandra, Agra. My father is Sri Halarius and Mother is Smt. Silvia Kerketta. I was born on Oct 9, 1992. We are four brothers. My beloved parents helped me from the very early childhood to grow in my spiritual life. CFMSS Sisters of St. Francis Convent, Sikandra, Agra sowed the seed of vocation, and later Rev. Fr. Peter Parkhe, the then Asstt. Parish Priest of the Cathedral Parish, Agra encouraged me to join the minor seminary.

I did my primary studies from Shree Shila Raj School, Sikandra, Agra. I joined St. Lawerence Minor Seminary, Agra in 2009. The then Father Rector Rev. Fr. Joseph Dabre, Fr. Dominic George, Fr. Mathew (Joby) Kanjirathinkal and Spiritual Father Rev. Fr. Eugune Moon Lazarus guided me there. On completing my one year formation, I was sent to Assisi Convent School, Etah to do my Intermediate studies. On my return to minor seminary, the then Fr. Rector Mathew (Joby) and Fr. Arun Lasrado (Asstt.) helped me and encouraged me to do Hindustani classical music. Then I did my Junior Diploma in H.C. Music from Sangeet Sadhana Mandir, Pachamari (M.P.)

Then I was promoted to do my Philosophy studies at St. Francis Xavier's Regional Seminary (Masih Vidyapeeth), Etmadpur, Agra. There I did my Spiritual Orientation and Philosophy studies.

Then I was sent to Rosary Church, Bastar to do my first phase of Regency under the able guidline of Rev. Fr. Suresh D'Souza and, then for the second phase at Nishkalanka Mata Mission, Jaith (Mathura) under Rev. Fr. Jacob (Saji) Palamattom and Fr. Louis Xess. After successfully completing my Regency, I was sent to do my Theology studies, to St. Joseph's

Regional Seminary, Allahabad.

I was ordained Deacon on Aug 8, 2021, by the Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, the Archbisopho of Agra, in the Seminary Chapel due to Covid-19 protocol. I did my Diaconate ministry at the Cathedral of Immaculate Conception, Agra under the able guidance of Rev. Fr. Ignatius Miranda (Parish Priest) and Rev. Fr. Viniversal D'Souza (Asstt. Parish Priest).

A assure you all a remembrance at my altar on the day of my priestly ordination (i.e. April 24, 2022). In return I seek your prayers and blessings.

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी महिलाओं को समर्पित

नारी

घर में रहने पर भी, आज आसमान पर है नारी,
बनकर प्रेरणा साथी की, साथ खड़ी है ये नारी।
अपने कर्मों को करने पर, कभी नहीं हारी है नारी,
सबका रखती ध्यान, प्यार से है बारी-बारी।
उससे सब उम्मीदें हैं रखते, लगती सबको प्यारी,
घर के साथ समाज में भी, खेलती है वो नारी।
दुश्मनों के सामने है, दुश्मनों पर हैं भारी,
सदा रहती सबसे आगे, डरी नहीं है ये नारी।
है तेज़ तूफान से ज्यादा, अगर मुसीबत में है नारी,
मेहनत और लगन से, निभाती जिम्मेदारी सारी।
समाज के हित में, समाज में उतरी है ये नारी,
आज किसी से पीछे नहीं रही है ये नारी।
दुनिया की शक्ति बनकर, साथ चलती है ये नारी।
ईश्वर की बनाई हुई, खूबसूरत मूरत है नारी।।

सरफीना शॉ (अध्यक्ष-महिला मण्डल)
सेंट थॉमस पल्ली, सिकन्दरा, आगरा

Continued from page 22

Today St. Peter's School and Church at Bharatpur grieve over the passing away of a great leader who wished to do a lot of great service to humanity. Our sadness runs very deep. He stayed at Bharatpur only for a short time but what an imprint his footprints have left here!

"His demise leaves profound grief
No one can heal
His memories are treasures
No one can steal "
At this juncture we the Peterians long for;
" If tears could build a stairway
And memories a lane,
We would walk right up to heaven
And bring him back again "

Tearful Adieu Rev. Fr. Mathew

- Mini Jacob, Bharatpur

पृष्ठ 22 का शेष

मिस्सा के अंत में फादर सेबास्टियन कुल्लीथानम ने फादर मैथ्यु थुंडियिल के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। फादर सुनील मैथ्यु ने महाधर्मप्रांत आगरा की ओर से थुंडियिल परिवार के प्रति शोक संवेदनाएं व्यक्त कीं ओर धीरज बंधाया। तत्पश्चात गमगीन दिलों और नम आँखों से उनके जनाज़े (पार्थिक शव) को चर्च कम्पाउण्ड में ही स्थित कब्रिस्तान में सुपुर्दे खाक कर दिया। मिट्टी से बनी काया को मिट्टी में रख दिया, जहाँ, कयामत के दिन प्रभु आकर उन्हें अपने साथ ले जाएंगे।

फादर मैथ्यु ने अपने भरे पूरे परिवार में अपनी वृद्धा माता जी, तीन विवाहित बहनों और दो विवाहित भाइयों को छोड़ा है। उनके ऊपर जो त्रासदी आन पड़ी है, दु:खों का जो पहाड़ टूट पड़ा है, प्रभु उन्हें सहन करने की शक्ति और सांत्वना प्रदान करे।

— फादर मून लाजरस (संपादक)

Prayer for Deliverance from Pandemic

Eternal Father / You have made the whole world stop / walking for a while.
You have forcibly silenced the noise / that we have all created around us.
You have made us bend our knees / and ask for miracles.
You closed the Churches / Temples / Mosques / Gurudwaras /
so that we realize / how dark our world is / without You in it.
You humiliated the proud and powerful.
The economy is collapsing / businesses are closing / Unemployment is increasing /
We have been very proud to think / that everything we have / everything we own /
have been the result of our hard work.
We have forgotten / that it was Your Grace / Your Mercy /
that made us who we are /and has given us everything we have.
We are going around in circles / looking for some cure for this disease /
when in fact / we need to humble ourselves /
and ask for guidance and wisdom / only from You.
We have been living our lives / as if we are here on Earth forever /
as if there is no Heaven / no Purgatory / no Hell.
Perhaps this virus is actually /
Your way of purifying and cleansing our souls / bringing us back to You.
Today / as these words travel the internet / may all who see them /
join their handsandhearts in prayer / asking for forgiveness /
asking for healing and protection / against this virus /
but above all asking / that Your Holy and Divine Will be done / and not ours.
GOD we beg You / deliver us from all evil on Earth / if it is Your will!
Father / You have been patiently waiting for us /
to turn our faces to You / to repent of our sins.
We are sorry to ignore Your voice! /
Selfishly / sometimes we have forgotten / that You are GOD!! /
Lord / I am not worthy to have you / come into my house /
but one word from you / will be enough to heal me!
We ask You Jesus / for healing and deliverance /
by the infinite merits of Your Most Sacred Heart /
and of the Sorrowful / and Immaculate Heart of Mary. Amen.

– POPE FRANCIS

सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा छावनी में मेधावी छात्राओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए

आगरा, 3 मार्च। सेंट पैट्रिक्स सोशल वर्क सेंटर में प्रमाण पत्र वितरण समारोह आयोजित किया गया। यह आयोजन सिलाई व ब्यूटीशियन कोर्स की छात्राओं के लिए आयोजित किया गया था। छात्राओं ने अपने हुनर का बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। छात्राओं ने छः महीने का कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया। इस आयोजन में फादर भास्कर जेसुराज, फादर ग्रेगरी, सिस्टर विक्टोरिया एलेक्स मुख्य अतिथि रहे। समारोह के अंत में उपस्थित फादर्स एवं सिस्टर्स ने छात्राओं को प्रमाण-पत्र भेंट किए तथा सभी छात्राओं को उनके हुनर के लिए प्रोत्साहित किया।

— सिस्टर मेरी अंजू, आगरा छावनी

''महिला परिवार की महत्वपूर्ण ईकाई है'': बिशप राफी अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस सम्पन्न

आगरा, 14 मार्च। ''परिवार समाज की सबसे छोटी किन्तु महत्वपूर्ण इकाई है। स्त्री-पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। स्त्री परिवार की धुरी है। चर्च प्रारम्भ से महिलाओं के सम्मान, गरिमा और सशक्तिकरण के लिए प्रयासरत है।'' महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि महिला दिवस के अवसर पर आगरा धर्मक्षेत्र की महिलाओं को सम्बोधित कर रहे थे। रविवार 13 मार्च को स्थानीय सेंट जोसफ सामुदायिक केन्द्र में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया, जिसमें आगरा धर्मक्षेत्र के विभिन्न शहरी व ग्रामीण अंचलों से आईं करीब 97 महिलाओं ने भाग लिया।

समारोह की अध्यक्षता आर्चबिशप डॉ. राफी मंजलि ने की। मुख्यातिथि कैथोलिक चर्च के महिला आयोग की राष्ट्रीय सचिव सिस्टर नव्या (एफ सी सी) थीं। मुख्यातिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के बाद प्रार्थना गीत के साथ समारोह प्रारम्भ हुआ। इससे पूर्व महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी ने कई पुरोहितों के साथ ऐतिहासिक विशाल महागिरजाघर में महिला दिवस की पवित्र मिस्सा पूजा एवं पूजन विधि सम्पन्न कराई।

तत्पश्चात समारोह के दौरान आयोग की धर्मप्रांतीय सचिव सुश्री पैंसी थॉमस ने विगत वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट

प्रस्तुत की। आयोग के नए निर्देशक फादर ग्रेगरी थरायल ने सभी विशिष्ट अतिथियों का शॉल ओढ़ाकर व गुलदस्ता देकर स्वागत किया। इस अवसर पर आगरा, हाथरस व नोएडा से आई महिलाओं ने मनभावन गीत-संगीत एवं सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय सचिव सिस्टर नव्या ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा, कि ''महिला दिवस समारोह मनाना मात्र एक औपचारिकता नहीं होनी चाहिए। हमें प्रतिदिन महिलाओं का सम्मान करना चाहिए। महिलाओं को भी यह विश्वास करना होगा, कि वे पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर हर क्षेत्र में कार्य कर सकती हैं। उन्हें अपनी क्षमताओं और लक्ष्य को पहचानना चाहिए।''

- पैन्सी थॉमस, सचिव, महिला आयोग
(आगरा महाधर्मप्रांत)

सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा में महिला दिवस की धूम

आगरा, 20 मार्च। संत पैट्रिक्स पल्ली, आगरा छावनी में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस बहुत ही उत्साहपूर्वक मनाया गया। पल्ली की सभी महिलाओं ने इसमें अपना भरपूर योगदान देते हुए प्रत्येक कार्य को बड़ी ही कार्यकुशलता पूर्वक किया। प्रस्तावना, पहला और दूसरा पाठ महिलाओं द्वारा ही पढ़े गये। इस समारोह की शोभा को बढ़ाने को लिए हमारी पल्ली में श्रद्धेय फादर मून लाजरस को भी आमन्त्रित किया गया था। सभी पुरोहितों द्वारा अत्यंत ही भक्तिभावना से पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया गया। महिलाओं द्वारा संचालित गायन मण्डली ने गीतों व भजनों द्वारा समस्त वातावरण अति भक्तिमय बना दिया। श्री डेसमण्ड फर्नांडीज ने अपने सुंदर एवं मनोरम संगीत के सुरों द्वारा गायन मण्डली का नेतृत्व किया। मिस्सा के अंत में फादर मून लाजरस ने सभी महिलाओं के लिए एक 12 प्रश्नीय बाइबिल प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया, जिसमें से अधिकांश गैर-काथलिक गिरजाघरों से आईं युवतियों ने सही उत्तर दिए।

संत पैट्रिक्स चर्च की कनोसियन धर्मसमाज की धर्मबहनों द्वारा संचालित समाज सेवा केन्द्र की पांच प्रतिभाशालियों को भी सम्मानित किया गया। इन्हें सिलाई एवं ब्यूटीशियन के कोर्स के लिए ट्रेनिंग दी गई थी। उन्हें प्रमाण पत्र और पुरस्कार भी दिए गए।

कार्यक्रम के अंत में सभी महिलाओं एवं समस्त पुरोहितों के साथ ग्रुप फोटोग्राफ भी लिये गये। मिस्सा बलिदान के पश्चात महिलओं द्वारा एक दुकान भी लगाई गई, जिसकी आय से उन बच्चों की मदद की जा सके, जो किताबें व कापियां जैसी स्कूल के लिए उपयोगी सामग्री खरीदने में असमर्थ हैं। यह कार्यक्रम वास्तव में हमारे पल्ली पुरोहित फादर ग्रेगरी के अथक प्रयासों एवं ईश्वर के महान प्रेम एवं अनुग्रह का एक सुंदर उदाहरण है।

— डिम्पल मैसी, आगरा छावनी

सेंट थॉमस पल्ली, सिकन्दरा में महिला दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

आगरा, 20 मार्च। सेंट थॉमस चर्च, सिकन्दरा में

महिला दिवस बड़े उत्साह व उल्लास के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम महिलाओं को तिलक लगाया गया। अपने हाथों में जलती हुई मोमबत्तियां लेकर सभी महिलाओं ने भक्तिपूर्वक जुलूस में प्रवेश किया तथा वेदी के समक्ष पुष्प अर्पित किये। पल्ली पुरोहित फादर डेनिस डिसूजा ने पवित्र मिस्सा बलिदान में सभी महिलाओं का स्वागत किया तथा सभी महिलाओं के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए सुखद जीवन के लिए विशेष प्रार्थना की। उन्होंने सभी महिलाओं के आदर्श जीवन की विशेषताओं व महिलाओं के आदर व सम्मान पर विशेष जोर दिया। उन्होंने बताया कि महिलाओं से ही सशक्तिकरण व पूर्ण समाज का निर्माण होता है। मिस्सा के बाद सभी पुरुषों की तरफ से नाश्ते का प्रबन्ध किया गया था। चर्च की धर्मविधि का कार्यभार मुख्यत: महिलाओं ने संभाला।

बीत शुक्रवार (18 मार्च) को महिलाओं ने क्रूस रास्ता आयोजित किया तथा पूजन पद्धति में अपना विशेष सहयोग दिया। उसके बाद सभी को अपना उपवास तोड़ने के लिए आहार वितरित किये गए। इस प्रकार से हमारी पल्ली में महिला दिवस मनाया गया।

— सेराफिना शॉ व जॉनसन जेनेबियुस, आगरा

संत जूड पल्ली कौलक्खा में महिला दिवस का आयोजन किया गया

आगरा, 20 मार्च। संत साईमन एवं संत जूड पल्ली, कौलक्खा में बड़े ही हर्ष के साथ महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में श्रीमती मेरी ने पल्ली की समस्त महिलाओं का स्वागत किया। इससे पूर्व सभी महिलाओं ने दो पंक्तियों में जलती हुई मोमबत्तियां अपने हाथों में लेकर गिरजाघर में प्रवेश किया व वेदी के सामने शीष झुकाकर आशीष प्राप्त की। पूजन विधि की अगुवाई पल्ली पुरोहित फादर राफी व फादर शीजु द्वारा की गई। यूखरिस्तीय समारोह के सभी काम महिलाओं द्वारा किये गये। मिस्सा के बाद पल्ली की ओर से समस्त महिलाओं के सम्मान में एक अभिनन्दन समारोह रखा गया एवं जलपान की व्यवस्था भी की गई थी।

–अंजलीना मोसस, कौलक्खा, आगरा

सेंट पैट्रिक्स चर्च में बच्चों ने किया अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन

आगरा, 22 मार्च। सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा छावनी में बच्चों का सामूहिक शिक्षा वार्षिक दिवस मनाया गया। इस मौके पर बच्चों के लिए कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपनी अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

उपस्थित जनों ने बच्चों की हौसला अफजाई की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फादर जॉन रोशन परेरा ने बच्चों को पुरस्कृत किया। निर्णायकों में पल्ली पुरोहित फादर ग्रेगरी, पल्ली पुरोहित फादर शाजुन, फादर भास्कर, सिस्टर विक्टोरिया, सिस्टर अंजू, सिस्टर लिस्सी रहे। कार्यक्रम के आयोजन में श्री जेकब लाल, रोहित मैसी, फिलिप और लॉरैन्स मसीह ने भरपूर सहयोग प्रदान किया।

–जेकब लाल, आगरा छावनी

संत अल्फोंसा स्पेशल स्कूल, आगरा में वार्षिक स्पोर्टस डे मनाया गया

सेंट अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय में 24 मार्च को स्पोर्टस डे का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सेंट पीटर्स कॉलेज के उप प्रधानाचार्य फादर संतीश एंथोनी, उत्तर क्षेत्रीय समाज विकास केन्द्र के डायरेक्टर फादर पायस फिलिप, विद्यालय के मैनेजर आदरणीय फादर साजी, स्पेशल ओलम्पिक भारत के नेशनल ट्रेनर श्री अरुण सिंह, सिस्टर मैरिन जोस और सिस्टर अल्बर्ट मरिया आदि उपस्थित रहे। अतिथियों का सम्मान सेपलिंग (पौधा) भेंटकर किया गया।

कार्यक्रम के शुभारम्भ में सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलन करके किया गया। इस अवसर पर बच्चों के लिए रेस, साईकिल रेस, सॉफ्ट बॉल थ्रो, वेट लिफ्टिंग आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया और अपनी प्रतिभाओं का अद्‌भुत प्रदर्शन किया। विद्यालय प्रांगण में उपस्थित सभी अतिथियों और अभिभावकों ने बच्चों के प्रदर्शन की सहृदय सराहना की और बच्चों का मनोबल बढ़ाया।

कार्यक्रम के अन्त में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मैडल पहनाकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के स्पीच थैरेपिस्ट नीतेन्द्र पाल सिंह द्वारा किया गया।

— नीतेन्द्र पाल सिंह, आगरा

रुनकता (आगरा) में एक नए स्कूल का उद्‌घाटन सम्पन्न

आगरा, 26 मार्च। अवर लेडी ऑफ फातिमा सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, अलीगढ़ की एक अन्य शाखा सेंट मेरीज़ कान्वेण्ट स्कूल, रुनकता (आगरा) में प्रारम्भ हो गई। यह स्कूल आगरा-मथुरा एन.एच. 2 मार्ग पर स्थित रुनकता से फतेहपुर सीकरी वाले मार्ग पर बाईं ओर से करीब 2 किलोमीटर दूर स्थित है।

फ्रांसिस्कन सिस्टर्स ऑफ सेंट मेरी ऑफ दी एंजेल्स सिस्टर्स को शिक्षा के क्षेत्र में विगत 150 वर्ष का गहन अनुभव है। यह नया स्कूल, अलीगढ़ शाखा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर जुबिली भेंट स्वरूप है।

उद्‌घाटन समारोह की अध्यक्षता आगरा के महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में निवर्तमान महाधर्माचार्य डॉ. आल्बर्ट डिसूजा एवं फादर भास्कर जेसुराज भी उपस्थित थे। जयपुर प्रोविन्स की प्रोविन्शियल सिस्टर ईश प्रिया एवं अन्य कई स्थानों से आई एफ एस एम ए सिस्टर्स भी उपस्थित थीं। इनके अतिरिक्त सेंट थॉमस पल्ली, सिकन्दरा के पल्ली पुरोहित फादर डेनिस डिसूजा व बहुत सी धर्मबहनें भी समारोह में आमंत्रित थीं।

समारोह की शुरुआत भारतीय परंपरा के अनुसार श्रीफल (नारियल) फोड़कर हुई। उसके बाद सिस्टर ईश प्रिया ने नाम पट्‌टिका का अनावरण किया। महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि ने मुख्य द्वार का फीता काटकर सबको प्रवेश के लिए आमंत्रित किया, जहाँ नए

भवन पर पवित्र जल की आशीष की मुख्य प्रार्थना सम्पन्न हुई। अलीगढ़ स्कूल से आई गायन मण्डली ने श्री आईवन के निर्देशन में सुमधुर एवं अवसरानुकूल भजन गाकर वातावरण को और भी भक्तिमय बना दिया। आशिष की धर्मविधि के पश्चात एक सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। तत्पश्चात एक अभिनन्दन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जहाँ सभी प्रमुख एवं विशिष्ट अतिथियों को शॉल ओढ़ाकर पुष्प गुच्छ एवं स्मारिकाएं देकर सम्मानित किया गया। दोनों महाधर्माध्यक्षों, प्रोविन्शियल एवं स्थानीय ग्राम प्रधान आदि सभी ने सभा को सम्बोधित किया।

सेंट मेरीज़ स्कूल, रुनकता की स्कूल इंचार्ज सिस्टर रजत ने बताया कि उस दिन तक 30 बच्चों का दाखिला किया जा चुका था। उन्होंने उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट किया। प्रीतिभोज के साथ समारोह सम्पन्न हो गया।

— सिस्टर ज्योत्सना, प्रधानाचार्या
ओ.एल.एफ. स्कूल, अलीगढ़

ईश्वर अपने संस्कारों में उपस्थित है: बिशप राफी
सेंट मेरीज़ चर्च में संस्कार अनुष्ठान सम्पन्न

आगरा, 27 मार्च। आगरा महाधर्मप्रांत के महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि ने अपने वार्षिक भ्रमण के दौरान स्थानीय प्रतापपुरा स्थित सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा में चर्च समुदाय के 30 बालक-बालिकाओं को संस्कार प्रदान किए। दुल्हन की तरह सजे और खचाखच भरे गिरजाघर में बच्चों व विश्वासियों को सम्बोधित करते हुए महाधर्माचार्य ने कहा, कि ''नश्वर इंसान को ईश्वर की उपस्थिति का एहसास नहीं होता, इसलिए उसे प्रस्तुत करने व उसका अनुभव करने और कराने के लिए हमें चिह्नों और संस्कारों की आवश्यकता होती है। प्रभु अपने संस्कारों द्वारा हमारे बीच सदा विद्यमान रहते हैं।'' महाधर्माचार्य ने छः अन्य पुरोहितों के साथ पूजा-पद्धति व अनुष्ठान सम्पन्न कराया।

विगत दो वर्षों से कोरोना संक्रमण के कारण इस प्रकार की धर्मविधि आयोजित नहीं की जा सकी थी। इस वर्ष पूजा के दौरान 20 बच्चों को दृढ़ीकरण तथा 10 को प्रथम बार पवित्र परम प्रसाद संस्कार प्रदान किए गए। भक्तिमय वातावरण में गायन मण्डली का सफल निर्देशन सुश्री डिंपल मैथ्यू ने किया। आज की पूजा की विशेषता यही थी, कि स्वागत वचन, धर्मग्रन्थ पाठ, विश्वासियों के निवेदन प्रार्थनाएं, परमप्रसाद से पहले और बाद की प्रार्थनाएं, धन्यवाद ज्ञापन सब कुछ बच्चों द्वारा ही किया गया। सर लॉरैन्स गोम्स और सुश्री पैंसी थॉमस ने धर्म माता-पिता की जिम्मेदारी निभाई। सिस्टर विंसी पॉल (एम.सी.) तथा सुश्री मीना पोलोक ने सभी बच्चों को धर्मशिक्षा की की कक्षाओं के द्वारा तैयार किया। पूजा-संस्कार के पश्चात सभी बच्चों के सम्मान में पैरिश हॉल में एक अभिनन्दन व बधाई समारोह का आयोजन किया गया था।

—रोज़मेरी टोप्पो एवं ग्रेसी वैल्स, आगरा

सेंट अल्फोंसा के बच्चों ने ताज महोत्सव देखा

आगरा, 28 मार्च। सेंट अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय के सभी बच्चों और स्टाफ सदस्यों ने विद्यालय की डायरेक्टर श्रद्धेय सिस्टर अल्फो मैथ्यू के नेतृत्व में

शिल्पग्राम में चल रहे ताज महोत्सव का आनन्द लिया। इस दौरान बच्चों ने मुक्ताकाशीय मंच पर एक अत्यंत मनोहारी समूह नृत्य प्रस्तुत किया। यह शुभ अवसर विद्यालय की शुभचिन्तक एडवोकेट डॉ. प्रमिला शर्मा के प्रयासों से विद्यालय परिवार को प्राप्त हुआ। इसके लिए विद्यालय परिवार सदा आभारी रहेगा।

विद्यालय के छात्र मास्टर हिमांशु तथा मास्टर उदित ने एकल नृत्य की प्रस्तुतियां दीं। बच्चों की सुन्दर प्रस्तुति से दर्शक बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने करतल ध्वनि से बच्चों का उत्साहवर्धन किया। ताज महोत्सव आयोजन समिति द्वारा बच्चों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किये।

— मीनू यादव, आगरा

सेंट पैट्रिक्स सोशल वर्क सेण्टर में छात्राओं को सिलाई मशीन के पायदान वितरित किए गए

आगरा, 31 मार्च। सेंट पैट्रिक्स चर्च प्रांगण में स्थित कनोसियन सिस्टर्स द्वारा संचालित सेंट पैट्रिक्स वर्क सेण्टर में प्रख्यात चिकित्सक एवं सेण्टर की एक शुभचिंतक डा. सरोज प्रशांत मंजु और उनकी टीम ने भ्रमण कर सेण्टर में विभिन्न कोर्सों जैसे सिलाई-कढ़ाई, ब्यूटीशियन आदि कोर्स कर रही छात्राओं और उनकी शिक्षिकाओं से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने मेधावी छात्राओं को सिलाई मशीन के पायदान सप्रेम भेंट किए। छात्राएं ये उपहार पाकर फूली नहीं समा रही थीं। उनकी खुशियों की सीमा नहीं थी। कुछ ने भावुक होकर बताया, कि इससे उनको बहुत मदद मिलेगी और अब वे अपने पाँवों पर और मजबूती से खड़ी होकर काम कर सकेंगी। पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर ग्रेगरी थरायल ने बताया कि ''यह अपने आप में महिला दिवस पर हमारी युवतियों और महिलाओं को सशक्त बनाने का एक बड़ा प्रयास है।'' उन्होंने सभी मशीनों पर पवित्र जल से आशीष दी। इस अवसर पर सिस्टर विक्टोरिया, सिस्टर अंजू मेरी (निर्देशिका) एवं विभिन्न छात्राएं तथा टीचर्स उपस्थित थे।

— सिस्टर अंजू मेरी, आगरा छावनी

ICYM (Agra Unit) organises Blood Donation Camp during Lenten Season

Agra, 3 April. Indian Catholic Youth Movement (ICYM), Agra unit like many previous years this year too organised a blood donation camp with the help of Sarojini Naidu Medical College, Agra. ICYM has been organising this camp for past many years during Lenten Season. The camp was organised in St. Peter's College, Agra. Rev. Fr. Andrew Correia, Principal of SPC, arranged everything for the camp i.e. beds, medical kit, sanitizer, fruits and soft drinks etc. Dr. Kamal, professor in Anatomy Deptt. Dr. Prem Singh, Dr. Yatendra Singh and Dr. Komal with Dr. Garima from blood centre, SN Medical College along with many volunteers helped in the camp.

Commandant N.K. Singh was the guest of honour. He was given a sapling as a token of gratitude. He gave a motivational talk to our young donors. He said 'donating blood is a noble act of saving many lives.'

Dr. Kamal said that by donating our body does not become weak but within a short time new blood cells are born. Thus, it is great to donate blood.'

Principals and students from various school and colleges participated in the camp. Every donor was offered fruit juice and biscuits etc. They were given certificates from SN Medical College, Agra.

It was really a memorable day. We thank all our doctors, organizers, volunteers and blood donors. May God bless them all.

Devina Lamba (Youth President)
St. Mary's Church, Agra

सेंट मेरीज़ चर्च की स्थापना के 99 वर्ष पूर्ण

आगरा 5, अप्रैल। प्रतापपुरा स्थित सेंट मेरीज़ चर्च की स्थापना के 99 वर्ष आज पूर्ण हो गए और शताब्दी वर्ष (सौंवा साल) प्रारम्भ हो गया है। शहर के मध्य स्थित यह चर्च भारतीय-इतालवी स्थापत्य कला का अद्भुत मिश्रण है। प्रतिदिन प्रार्थना करने वालों और माता से गुहार लगाने वालों का यहाँ तांता लगता रहता है। नित्य प्रति यहाँ लोगों की मन्नतें पूरी हो जाती हैं और नि:संतानों को संतान प्राप्ति का वरदान मिल जाता है। इस दृष्टि से यह चर्च बहुत चमत्कारी भी माना जाता है।

99 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रात: एक धन्यवाद का पूजा-बलिदान चढ़ाया गया। पल्ली पुरोहित फादर स्टीफन के साथ पांच अन्य पुरोहितों ने विधि-विधान में भाग लेकर ईश्वर को धन्यवाद का बलिदान चढ़ाया। निकटवर्ती गुरुकुल, धर्मसमाजों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ बहुत से विश्वासियों ने इसमें भाग लिया। अपने संक्षिप्त सम्बोधन में पल्ली पुरोहित ने बताया, कि ''चर्च का निर्माण इटली के सुप्रसिद्ध जॉन परिवार ने अपनी माता स्वर्गीय श्रीमती मेरी की याद में करवाया था। जॉन परिवार के अधिकांश सदस्य वजीरपुरा मार्ग स्थित निष्कलंक माता महागिरजाघर के प्रांगण में चिर निद्रा में लीन हैं।''

आगरा महाधर्मप्रांत के आध्यात्मिक निर्देशक और मीडिया प्रभारी फादर मून लाजरस ने बताया कि यह गिरजाघर जॉन परिवार की ओर से आगरा के ईसाई समाज के प्रति धन्यवाद स्वरूप है। इसी परिवार की आगरा में प्रसिद्ध जॉन्स मिल चलती थी। चर्च का निर्माण 1920 में प्रारम्भ होकर 1923 में समाप्त हुआ। इससे पूर्व स्थानीय ईसाई लोग प्रतिदिन पूजा प्रार्थना संस्कार के लिए छावनी स्थित सेंट पैट्रिक्स चर्च जाया करते थे। कभी-कभी पुरोहित वहां से सेंट मेरीज़ चर्च आकर पूजा अनुष्ठान सम्पन्न कराते थे। चर्च प्रांगण में बने ग्रोटो (गुफा) में माता की चमत्कारी मूर्ति लगी है, जहां प्रतिदिन शाम ढले भक्तों का मेला सा लग जाता है। इसी चमत्कारिक मूर्ति की प्रतिवर्ष 8 सितम्बर को चर्च के वार्षिकोत्सव के अवसर पर शहर में शोभायात्रा निकाली जाती है, जिसमें सभी धर्म सम्प्रदायों के विश्वासी श्रद्धापूर्वक भाग लेते हैं।

क्रिश्चियन समाज सेवा सोसाइटी के अध्यक्ष श्री डेनिस सिल्वेरा ने बताया कि इस अवसर पर सायं 5 बजे भी एक धन्यवाद की पूजा चढ़ाई गई जिसमें विश्वासियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। उन्होनें सभी लोगों को पर्व दिवस की शुभकामनाएं दीं।

—डेनिस सिल्वेरा, आगरा

एटा पल्ली में पवित्र बालकपन दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

एटा, 7 मार्च। सेंट फ्रांसिस चर्च, एटा में पवित्र बालकपन दिवस पारंपरिक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पूजन विधि के प्रारम्भ में मसीह विद्यापीठ, एत्मादपुर (आगरा) से आए मेहमान पुरोहित श्रद्धेय फादर पॉल मसीह और पल्ली के सभी बच्चों का तिलक लगाकर गर्मजोशी से स्वागत किया गया। तत्पश्चात सेंट मेरीज़ बाल भवन, एटा के बच्चों ने प्रवेश नृत्य किया। पल्ली की एक छोटी सी बालिका कु. वेलांकनी बेन्जामिन ने पवित्र बालकपन दिवस मनाए जाने के इतिहास और उसके महत्व को बड़ी सुन्दर तरीके से समझाया। उन्होंने बच्चों के प्रति प्रभु येसु के प्रेम और वात्सल्य के बारे में भी समझाया।

तत्पश्चात फादर पॉल मसीह और हमारे पल्ली पुरोहित फादर अरुल कुमार ने धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। अपने प्रभावशाली प्रवचन में फादर पॉल मसीह ने बच्चों को पर्व दिवस के बारे में समझाया। उन्होंने अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर (टी) का अर्थ बताया। उन्होंने टी अक्षर से प्रारम्भ हो रहे शब्दों, समय, तकनीकी और लक्ष्य का महत्व भी समझाया। बच्चों ने ही बाइबिल पाठ और विश्वासियों के निवेदन पढ़े। उन्होंने ही महा आरती भी उतारी। सभी ने अपनी क्षमतानुसार चढ़ावा भी चढ़ाया। गायन मण्डली का संचालन सेंट मेरीज बाल भवन की कन्याओं द्वारा किया गया। मिस्सा के बाद बच्चों के सम्मान में एक अभिनन्दन कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। मुख्यातिथि फादर पॉल मसीह ने पूर्व में आयोजित निबन्ध और फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किये। पल्ली पुरोहित फादर अरुल ने सबके प्रति आभार प्रकट किया। अंत में सभी बच्चों ने जलपान का आनन्द लिया। **— संगीता बेन्जामिन, एटा**

सेंट जोसफ चर्च, ग्रेटर नोएडा में महिला दिवस समारोह की धूम

नोएडा, 13 मार्च। संत जोसफ चर्च में 13 मार्च को महिला दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के प्रारम्भ में सभी महिलाओं ने हाथों में फूल लेकर जुलूस के साथ माता मरियम की तस्वीर के सामने पुष्प अर्पित किये। मिस्सा बलिदान पल्ली पुरोहित फादर विनोय और फादर सेबास्टियन द्वारा चढ़ाई गयी। पूजन पद्धति और गायन मण्डली का आयोजन भी महिलाओं द्वारा किया गया। मिस्सा और सभी कार्यक्रम पल्ली पुरोहित के नेतृत्व में किये गये। सुंदर गीतों/भजनों के साथ मिस्सा शुरु हुई।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पूरी दुनिया में 8 मार्च को मनाया जाता है। यह एक ऐसा दिन है जब महिलाएं अपनी आजादी का खुलकर जश्न मनाती हैं। यह दिवस इसलिए भी जरूरी है क्योंकि आज की महिलाएं पुरुषों से किसी भी तरह से पीछे न रहते हुए अपने सपनों की उड़ान भरने में यकीन रखती हैं।

उन सभी महिलाओं के लिए प्रार्थना की गयी जो घरेलू हिंसा की शिकार हैं, कि परमेश्वर उनको हिम्मत, शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करे ताकि वे अपने लिए न्याय

और समानता के अधिकार को प्राप्त करने में सक्षम बनें।

मिस्सा के अन्त में माता मरियम के प्रति धन्यवाद का गीत गाया गया। तत्पश्चात सभी महिलाओं ने मिलकर बच्चों को मिठाइयां बांटीं और लोगों के लिए जलपान का प्रबंध किया। उसके बाद एक लघु सेमिनार का आयोजन सिस्टर रेखा पुनिया द्वारा किया गया। शुरुआत आशीष की प्रार्थना से हुई। इस सेमिनार में सभी महिलाओं को बताया गया कि उन्हें अपनी दिनचर्या में कैसे बदलाव लाना चाहिए। सेमिनार के बाद पल्ली की ओर से सभी महिलाओं और उनके परिवारीजनों के लिए लंगर की व्यवस्था की गई थी।

— श्रीमती रेनू जॉन, ग्रेटर नोएडा

एटा पल्लीवासियों द्वारा चालीसा काल में विश्व प्रसिद्ध कृपाओं की माता तीर्थस्थान (सरधना, मेरठ) की तीर्थयात्रा

एटा/सरधना 19 मार्च। प्रभु येसु के पवित्र दु:खभोग काल में महान संत यूसुफ के महापर्व के अवसर पर सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर चर्च, एटा के सभी पल्लीवासियों ने विश्व प्रसिद्ध कृपाओं की माता के चमत्कारिक तीर्थस्थान की एक दिवसीय तीर्थयात्रा की। यात्रा में पल्ली के प्राय: सभी विश्वासियों ने बढ़चढ़कर भक्ति भावना के साथ भाग लिया, और इस दौरान आपस में एक दूसरे का भरपूर ध्यान रखा।

वहाँ पहुँचकर पल्ली पुरोहित फादर अरुल कुमार ने माता मरियम एवं संत यूसुफ के सम्मान में धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। तीर्थस्थान में पहुंचने पर मैंने एक दिव्य अलौकिक शक्ति का अनुभव किया। मेरे मन में शुरु से ही बहुत अशान्ति थी। तब मैंने माता मरियम की दिव्य मूर्ति के सामने बैठकर अपने आपको माता के हाथ में समर्पित कर दिया। वहाँ घुटने टेककर मैं काफी देर तक प्रार्थना करती रही। समय का मानो पता नहीं चला। मैं गिड़गिड़ाकर माँ से प्रार्थना करती रही। तब मुझे एक प्रकार की आंतरिक और आध्यात्मिक शांति का अनुभव हुआ। मुझे अपने तन से शीतल वायु के झोंके टकराते महसूस हुए। मुझे लगा कि मानो शाम हो चली है। मेरी आँखों से निरन्तर अश्क बह रहे थे। मैं निरन्तर प्रभु येसु को धन्यवाद दे रही थी। मैं उससे अपना हर दु:ख दर्द बांट रही थी और मैंने हर क्षण प्रभु की उपस्थिति को अनुभव किया।

जब भी मुझे अपने जीवन में किसी प्रकार की शिकायत या समस्या हुई है या मुझे कुछ चाहिए तो मैंने एक बच्ची के साथ उससे अधिकार के साथ मांगा है और झगड़ा किया है। वह मेरा पिता और मुक्तिदाता व भाई भी है। मैंने कभी भी निराशा का अनुभव नहीं किया है। चूंकि मैंने अपनी मर्जी से प्रेम विवाह किया है, इसलिए मैं अपने परिवार से भी कुछ नहीं मांग सकती हूँ। दूसरी प्रभु ने कभी भी मुझको अकेला या निराश नहीं छोड़ा है। उसने मुझे विवेक और शक्ति दी है।

समय की कमी के कारण मैं वहां अधिक समय तक नहीं रुक सकती थी। प्रभु ने पुन: मुझे ठण्डे हाथों के साथ स्पर्श किया। वहीं प्रभु ने मुझे तीन बार दर्शन दिए। उसने मेरा विश्वास कभी भी टूटने नहीं दिया। इसके बाद हमने गिरजाघर के प्रांगण में लगी क्रूस रास्ता की बड़ी–बड़ी मूर्तियों के सामने श्रद्धापूर्वक क्रूस के रास्ते में भाग लिया। तत्पश्चात हमने प्रीतिभोज में भाग लिया और वापसी प्रस्थान के लिए भारी मन से बस में जा बैठे।

बस में बैठकर मैं आज के अनुभव और प्रभु के स्पर्श के बारे में सोचने लगी। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं।

तभी मैंने देखा कि एक मोटी सी जंजीर स्वर्ग से धरा तक आ रही है। मैंने घबराकर अपनी आंखें खोल दीं और स्वप्न के बारे में सोचने लगी। कुछ क्षण पश्चात मैंने पुन: अपनी आंखें बंद कर लीं। तब मैंने एक और अद्भुत दर्शन देखा। मैंने देखा कि प्रभु येसु श्वेत कपड़े पहने अपने दोनों हाथों को फैलाए पृथ्वी से स्वर्ग की ओर देख रहे हैं। मैंने देखा कि उनका वस्त्र बहुत उज्जवल था और वह खत्म ही नहीं हो रहा था। मैंने एक बार फिर से अपनी आंखे खोल दीं। मैं मन ही मन यह सोचने लगी, कि कहीं यह मेरे मन का वहम तो नहीं था। तब मैंने तीसरी बार अपनी आंखों को बंद कर दिया। मैंने इस बार देखा कि तीन छोटे-छोटे स्वर्गदूत मुझे देखकर खिल खिलाकर हंस रहे थे। मैंने पुन: एक बार अपने अन्तस्ल में भीतरी आनन्द का ऐसा अनुभव किया, कि वो मेरे लिए वर्णन करने से परे है।

मैंने यह अनुभव किया कि मेरा विश्वास प्रभु में और भी अधिक मजबूत हो गया है। तब मैंने एक दिव्य ज्योति का अनुभव किया। ***ईश्वर की स्तुति हो। ईश्वर को धन्यवाद।*** **— संगीता बेन्जामिन, एटा**

रोज़री चर्च, बस्तर में महिला दिवस मनाया गया

बस्तर, 20 मार्च। रोज़री माता चर्च, बस्तर पल्ली में महिला दिवस मनाया गया। इस दिन की शुरुआत करूणा माला विनती के साथ हुई। तत्पश्चात हमने पवित्र मिस्सा बलिदान में अपनी पल्ली की एवं संसार की सभी महिलाओं के लिए प्रार्थना की। मिस्सा बलिदान की पूजन विधि हमारी महिलाओं द्वारा आयोजित की गयी थी।

सबसे पहले जुलूस में सभी महिलाओं ने अपने हाथों में जलती मोमबत्तियां लिए हुए प्रवेश किया। पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर सिजु एवं फादर बबीन द्वारा मिस्सा बलिदान चढ़ाया गया। पल्ली के ही एक युवक निखिल ने प्रस्तावना में सभी महिलाओं के प्रति आदर-सम्मान एवं हमारे जीवन में उनकी अहम भूमिका के बारे मे बताया। फादर सिजु ने ईशवचन के माध्यम से महिलाओं की भूमिका और उनके महत्व तथा उनके प्रति हमारे कर्तव्यों व जिम्मेदारियों के बारे में सुन्दर रूप से समझाया। अन्तिम गीत के बाद दोनों पुरोहितों ने सभी महिलाओं के सिरों पर हाथ रखकर आशीष की प्रार्थना की।

तत्पश्चात सभी ने मिलकर बधाई गीत गाए। सभी महिलाओं का अभिनन्दन किया। उसके बाद सभी पल्लीवासियों के लिए खेलकूद का आयोजन किया गया था। सभी लोगों ने प्रसन्नता से इन सभी कार्यों में हाथ बटाया एवं भाग लिया। अन्त में सभी विजेताओं को पुरस्कार देने के बाद जलपान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। **— अर्जुन सिंह, रोज़री चर्च, बस्तर**

Conference of Religious of India, Agra Unit (CRI) organised Annual Lenten Recollection and Pilgrimage

The CRI organized Lenten recollection and annual pilgrimage to Our Lady of Pilar, Dholpur on 20th March, 2022. 46 members participated in the Lenten recollection. At 7:00am we started from our Cathedral and by 9:00am we reached St. Xavier's School, Sua ka Nagla, Dholpur. There we were welcomed by Rev. Fr. Alfredo Rodrigues SFX, the Parish Priest of Our Lady of Pilar Church. At 9:30am, the members gathered in the Church. Rev. Sr. Alpho Mathew, the President of the CRI Agra welcomed the

august gathering of all Religious Fathers, Brothers and Sisters and introduced the theme of the day. During The first session, the resource person Rev. Fr. Eusebio Gomes, SFX the Principal of St. Xavier's School shared his valuable insights with the members in his recollection talk. He shared traditional meeting of Lent and its various dimensions. We have to be with the poor by quoting the story of rich man and Lazarus from the Bible. After the session the Sacrament of Reconciliation (Confession) took place.

Then the members participated in the Holy Eucharist at 11:45am. Rev. Fr. Macs SFX, in his homely exhorted every member to dig deeply into the well of spirituality and prepare themselves to celebrate Easter in a meaningful way. Rev. Fathers with the help of Missionary Sisters of Mother Mary served us lunch and we enjoyed their hospitality. Rev. Sr. Premila (St. Aloysius Niwas) proposed the vote of thanks. Thereafter, Rev. Fr. Eusebio Games, SFX led us to Chambal River and its surroundings. Fathers of Pilar Niwas served us cup of warm tea, drinks and snacks in the afternoon before we left for Agra. The CRI members expressed their profound gratitude and thanks to the Pilar Niwas community at Dholpur. It was indeed a great day to prepare ourselves spiritually to participate in the Paschal Mystery.

- Sr. Alpho Mathew FCC
President, CRI (Agra Unit)

सेंट फ्रांसिस चर्च, एटा में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस धूमधाम से मनाया गया।

एटा, 27 मार्च। सेंट फ्रांसिस चर्च, एटा में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाया गया। पूजन पद्धति के प्रारम्भ में सभी महिलाओं का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। सभी महिलाओं ने अपने हाथों में जलते हुए दीप लेकर गिरजाघर में प्रवेश किया। अंत में उन्होंने दीप वेदी के सम्मुख रख दिए। श्रीमती रेनू मिंज ने मिस्सा का परिचय दिया तथा प्रस्तावना पढ़ी। श्रीमती रेनू मिंज और श्रीमती मेरी जोस ने पवित्र बाइबिल से क्रमशः पहला और दूसरा पाठ पढ़ा।

पवित्र मिस्सा बलिदान के समय अपने प्रवचन में पल्ली पुरोहित फादर अरुल लाजर ने संत लूकस के सुसमाचार के 15वें अध्याय में वर्णित खोया हुआ सिक्का, खोयी हुई भेड़ और इनसे बढ़कर खोया हुआ पुत्र (उड़ाऊ पुत्र) को बहुत अच्छी तरह से समझाया। मर्मस्पर्शी संदेश के बाद सभी महिलाओं ने अपने निवेदन प्रभु के चरणों में अर्पित किए।

मिस्सा के अंत में श्रीमती संगीता बेन्जामिन ने सभी का आभार प्रकट किया। उपस्थित सभी लोगों ने महिलाओं को महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। सबके लिए जलपान की व्यवस्था की गई थी।

—संगीता बेन्जामिन, एटा

बस्तर पल्ली के विश्वासियों ने कृपाओं की माता (सरधना) के दर्शन किए

बस्तर/सरधना 31 मार्च। हम सभी रोज़री चर्च, बस्तर पल्लीवासी सरधना चर्च के लिए प्रात: 4 बजे बस्तर से रवाना हुए। माला-विनती बोलते, जयकारे लगाते हुए हमने अपनी तीर्थयात्रा की शुरुआत की। हम सभी पल्लीवासियों ने बस में माता मरियम के आदर में भजन-गीत गाते हुए खुद को आध्यात्मिक रूप से तैयार किया। लगभग साढ़े 11 बजे हम सभी लोग सरधना चर्च पहुँचे और वहाँ पर पल्ली पुरोहित एवं तीर्थालय के प्रशासक फादर ससिन बाबू ने हमारा स्वागत किया।

हम सभी ने अपने पल्ली पुरोहित के साथ माता मरियम के ग्रोटो (गुफा) पर मोमबत्ती जलाते हुए अपनी प्रार्थनाएं एवं मन्नतें माता के चरणों में रखीं। तत्पश्चात हम सभी पल्लीवासियों ने मिस्सा बलिदान में भाग लिया। श्रद्धेय फादर जोसफ सिजु पिण्डीकानाईल और फादर बबिन रायसन ने मिस्सा बलिदान चढ़ाया। उसके बाद हम सभी को चर्च के गाईड ने चर्च का इतिहास एवं वहां पर हुए चमत्कारों के बारे में बताया। दोपहर का भोजन करने के बाद हम सभी ने चर्च का भ्रमण किया एवं व्यक्तिगत प्रार्थना में समय बिताया। कुछ समय बाद हमने धार्मिक वस्तुएं जैसे क्रूस, मूर्तियां, पुस्तकें और माला आदि खरीदीं।

उसके बाद हम सभी ने चर्च में करूणा माला विनती का जाप किया और चर्च के बाहर क्रूस के रास्ते में भाग लिया। हम सभी के लिए बहुत ही आध्यात्मिक अनुभव था। हमने माता मरियम को, और उनकी आशीष प्रार्थना को अपने निजी जीवन में महसूस किया। अन्त में हम सभी ने कृपाओं की माता का आशीर्वाद लेकर पुन: अपनी पल्ली की ओर प्रस्थान किया। **ईश्वर को धन्यवाद, ईश्वर की स्तुति हो।**

— निवेदिता, रोज़री चर्च, बस्तर

चालीसा काल को भक्तिभाव से मनाने के लिए कृपाओं की मात की तीर्थयात्रा

चालीसा काल के तीसरे इतवार (19 मार्च) को सेंट फ्रांसिस पल्ली हाथरस के पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर सन्नी कोट्टूर के मार्गदर्शन और सहायक पल्ली पुरोहित श्रद्धेय ज़ेवियर जी. के नेतृत्व में कृपाओं की माता (सरधना) का एक दिवसीय तीर्थयात्रा का आयोजन किया गया। सुबह साढ़े छ: बजे प्रार्थना के साथ तीर्थयात्रा की शुरुआत हुई। भजन गाते व माला विनती जपते हुए लगभग 11.30 बजे हम कृपाओं की माता के दरबार में पहुंचे। वहां पर सभी पल्लीवासियों और उपस्थित श्रद्धालुओ के लिए फादर ज़ेवियर जी. द्वारा धन्यवाद का मिस्सा बलिदान अर्पित किया गया। हम सभी ने बड़ी भक्तिभावना से पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लिया। मिस्सा के समाप्ति के बाद अधिकांश लोगों ने पवित्र वस्तुओं की खरीददारी की। शाम को चार बजे माँ के दरबार से हमने वापस हाथरस की ओर यात्रा शुरु की। बीच में जलपान का प्रबन्ध किया गया था। हम रात्रि करीब साढ़े दस बजे सेंट फ्रांसिस चर्च हाथरस पहुंचे। अपने चर्च प्रांगण में रात्रि भोजन के साथ माँ मरियम को धन्यवाद देते हुए हमारी तीर्थ यात्रा का समापन हुआ।

— सुभाष कुमार, हाथरस

मेरठ धर्मप्रांत के धर्माध्यक्ष फ्रांसिस कलिस्ट पुडुचेरी के महाधर्माध्यक्ष नियुक्त

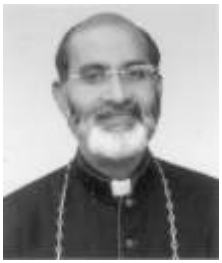

संत पिता (पोप) फ्रांसिस द्वारा मेरठ के धर्माध्यक्ष फ्रांसिस कलिस्ट को पुडुचेरी का महाधर्माध्यक्ष नियुक्त किया गया है। शनिवार, 19 मार्च को पोप फ्रांसिस ने उनकी नियुक्ति संबंधी आदेश जारी किया है। वे 13 साल से मेरठ धर्मप्रांत के धर्माध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं। 40 वर्षों के अपने कार्यकाल में बिशप फ्रांसिस कलिस्ट कई प्रमुख जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। सहायक पुरोहित, पल्ली पुरोहित और ईसाई गुरुकुलों की जिम्मेदारियां उन्होंने निभाई हैं।

64 वर्षीय बिशप फ्रांसिस कलिस्ट सरधना (मेरठ) के ऐतिहासिक चर्च के प्रशासक भी रह चुके हैं। कैथोलिक ईसाई समाज में पुडुचेरी के आर्चबिशप के रूप में उनकी नियुक्त अत्यंत महत्वपूर्ण है। नए पद पर आसीन होने तक वे मेरठ धर्मप्रांत की जिम्मेदारी संभालते रहेंगे।

महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि, महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा (निवर्तमान) आगरा के सभी पुरोहित, धर्मसंघी एवं लोकधर्मी उनके चयन एवं नियुक्ति पर बिशप फ्रांसिस कलिस्ट को बधाई हार्दिक व शुभकामनाएं देते हैं।

— संपादक (अग्रेडियन्स)

मानवता की मिसाल बनीं दो भारतीय नन मुसीबतें झेलकर बेघरों की सेवा में जुटी, पीछे नहीं हटी

आइजोल। यूक्रेन में भीषण छिड़ी है और लोग जैसे-तैसे जान बचाकर भाग रहे हैं। लेकिन कुछ लोग अपनी जान की परवाह किए बगैर पीड़ितों की देखभाल में जुटे हैं। भारत की दो धर्मबहनों ने तमाम मुसीबतों के बावजूद बेघर-बेसहारा लोगों की सेवा के लिए मानवता की अद्भुत मिसाल पेश की है।

सिस्टर रोसेला नुथांगी

सिस्टर एन फ्रीडा

इनके पास भी सुरक्षित निकलने का मौका था, पर मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी धर्मसमाज की मिजोरम निवासी दोनों ननों ने यूक्रेन छोड़ने से इनकार कर दिया है और संकट की घड़ी में लोगों की मदद का फैसला किया। बताया जा रहा है कि आइजोल से करीब 15 किमी उत्तर में स्थित सिहफिर गांव की सिस्टर रोसेला नुथांगी (65) और आइजोल के इलेक्ट्रिक वेंग इलाके की सिस्टर एन. फ्रीडा (48) दूसरे देशों की तीन अन्य ननों के साथ मिलकर कीव के एक गोदाम में 37 बेघर यूक्रेनियों और केरल की एक छात्रा की देखभाल कर रही हैं। हालांकि, उनके पास अब भोजन समेत अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी होने लगी है लेकिन उनका मदद का इरादा अडिग है। रोसेला की रिश्तेदार सिल्वीन जोथांसियामी ने बताया है कि उनके समक्ष वस्तुओं का संकट होने लगा है।

रोसेला व सिल्वीन से फोन पर हुई बातचीत में बताया कि हम ठीक हैं और अभी हमारे पास पहले से एकत्र की गई भोजन सामग्री से काम चल रहा है। हालांकि, बाहर गोलाबारी हो रही है और हम कहीं भी आ जा नहीं सकते हैं और अब एक गोदाम में छिप गए हैं।

सिस्टर फ्रीडा के भाई रॉबर्ट लालरूएथलुआंग ने आपसी बातचीत के आधार पर बताया कि उनकी बहन ने चिंता न करने को कहा है और मुश्किलों के बावजूद वह खुश हैं।

-समी आगाई, सद्भावना, आगरा

Sister Mary Joseph - New Leader of Missionaries of Charity Congregation

Kolkata, March 15, 2022: Sister Mary Joseph says she had spent a sleepless and anxious night before accepting to be the new leader of the Missionaries of Charity, the world renowned Catholic religious congregation founded by Saint Mother Teresa of Kolkata.

The election of the third successor of Mother Teresa took place on March 12, during the congregation's month long general chapter that began in February. The apex body of the congregation concluded the meeting on March 19, the feast day of St. Joseph.

Speaking to Matters India after the morning Mass on March 15 in the congregation's Green Park convent where the Chapter was being held, Sister Joseph said that she asked nervously "Why me?" when her name was announced to take over the congregation spread all over the world. A series of thoughts and challenges came to her mind. Foremost of them was fear.

However, she felt peace at heart, when Jesus assured her in prayer that He will be with her in all her responsibilities and mission.

For her it was "a decisive night," her dark night of soul, to say "Yes" to God. And "I prayed, 'Make me a channel of your peace, O Lord." She then became the first native Indian to head the 72-year-old congregation.

My life is to share the joy of giving and to put into practice charity among the poor and the most deprived."

- By Francis Sunil Rasario
Courtesy: Matters India

Mother Flavia, FCC passes away

Ghaziabad/Etah, 3 April, 2022: Rev Mother Flavia FCC, 88 years a pioneer in Archdiocese of Agra passed away this early morning at 3:30 a.m. at St. Joseph's Hospital, Ghaziabad. Her mortal remains were taken to Assisi Convent School, Sect 33, Noida where Holy Mass and office for the dead and the Holy Mass were held at 7:00 am. Later, during the day her body was taken to Assisi Convent School, Chamkeri, Etah for burial.

Most Rev. Dr. Albert D'Souza (Archbishop Emeritus) offered the Holy Mass. More than 25 Priests from Agra and Bijnor Dioceses concelebrated the funeral Mass. Her brother and sister-in-law and three sisters were also present.

In his heart touching homily the Archbishop said, that "out of her 68 years of Religious life, Mother Flavia served 59 years in the Archdiocese of Agra, thus she became a Mother to all priests, religious and faithful especially of Agra. Today one smiling face is less. She made her Stations of Cross by going from hospital to hospital and at the dawn of Sunday morning, she consented herself to the Divine Will of God. She like St. Paul taught us that,' we live and die for God. Jesus is the door; she is entering through him into heaven, knowing and doing the will of God which is the motto of every Religious." Rev. Sr. Ann Joseph, Provincial Superior proposed the vote of thanks. After the holy mass, her mortal remains were laid to rest in the FCC cemetery in the same compound of Assisi Convent, Chamkeri, Etah.

May her soul rest in peace!

- Fr. E. Moon Lazarus

Archdiocese at a Glance...Cont.

Holy Childhood Day, St. Patrick's, Agra

SMC, Women Conducting Way of the Cross

CRI in Dholpur (Raj.)

International Women's Day Celebration – Cathedral, Greater Noida & Sikandra

Mahila Diwas St. Jude, St. Mary's & St. Patrick's Church, Agra

Kripaon Ki Mata Ki Sharan Mein – Etah, Hathras & Bastar Pilgrims

Lest we forget...

Leo John (Hathras)
D.O.D. 24.02.2022

Nazareth T. Ferreira
(B/o Fr. John Ferreira)
DOD 14.03.22

Julian Pasala
(Uncle of Fr. J. Pasala)
DOD 23.03.22

Fr. Mathew Thundiyil
(Our Friend)
DOD 29.03.22

Sr. Flavia, FCC
(Our Mother)
DOD 03.04.22

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Nishi Augustine

With Best Compliments From :

The Manager, Principal, Staff & Students of

St Dominic's Academy

Bhooda, Agra Road, Shikohabad, Firozabad Dist. UP-283135

E-mail: st.dominicsacademy@gmail.com Website: www.stdominicsacademy.edu.i

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 9457777308

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com